ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

परोपकारिणी

वर्ष - ५७ अंक - २३ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र दिसम्बर (प्रथम) २०१५

महर्षि दयानन्द सरस्वती

श्री एम.वी.आर.शास्त्री

सम्पादक-आन्ध्रभूमि दैनिक, सिकन्दराबाद से ऋषि मेले में पधारे।
आपने ऋषि मेले में उद्‌बोधन दिया, जिसको आप इसी अंक में पढ़ सकते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुख पत्र

वर्ष : ५७ अंक : २३
दयानन्दाब्द: १९१
विक्रम संवत्: मार्गशीर्ष कृष्ण, २०७२
कलि संवत्: ५११६
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११६

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

दिसम्बर प्रथम २०१५

अनुक्रम

१. ऋषि दयानन्द की विलक्षणता	सम्पादकीय	४
२. स्तुता मया वरदा वेदमाता-२३		८
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	९
४. ईश्वर की सिद्धि में प्रमाण है	राजेन्द्रप्रसाद शर्मा	१६
५. आर्य समाज व आर्यवीर दल	कर्मवीर	१७
६. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		१९
७. दूसरों को कुछ देने का नाम यज्ञ है	कन्हैयालाल आर्य	२२
८. जिज्ञासा समाधान-१००	आचार्य सोमदेव	२८
९. परमेश्वर ही सच्चा गणेश है	इन्द्रजित् देव	३०
१०. ब्रह्मकुमारियों के षड़यंत्र से सावधान	स्वामी पूर्णानन्द	३३
११. 'परोपकारिणी-सभा' में भाषण	एम.वी.आर. शास्त्री	३५
१२. गृहस्थ-सन्त - पं. भगवान सहाय		३८
१३. संस्था-समाचार		३९
१४. आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

ऋषि दयानन्द की विलक्षणता

ऋषि दयानन्द के जीवन में कई विलक्षणताएँ हैं, जैसे-

घर न बनाना- किसी भी मनुष्य के मन में स्थायित्व का भाव रहता है। सामान्य व्यक्ति भी चाहता है कि उसका कोई अपना स्थान हो, जिस स्थान पर जाकर वह शान्ति और निश्चिन्तता का अनुभव कर सके। एक गृहस्थ की इच्छा रहती है कि उसका अपना घर हो, जिसे वह अपना कह सके, जिस पर उसका अधिकार हो, जहाँ पहुँचकर वह सुख और विश्रान्ति का अनुभव कर सके।

यदि मनुष्य साधु है तो भी उसे एक स्थायी आवास की आवश्यकता अनुभव होती है। उसका अपना कोई मठ, स्थान, मन्दिर, आश्रम हो। वह यदि किसी दूसरे के स्थान पर रहता है तो भी उसे अपने एक कमरे की, कुटिया की इच्छा रहती है, जिसमें वह अपनी इच्छा के अनुसार रह सके, अपने व्यक्तिगत कार्य कर सके, अपनी वस्तुओं को रख सके।

ऋषि दयानन्द इसके अपवाद हैं। घर से निकलने के बाद उन्होंने कभी घर बनाने की इच्छा नहीं की। उन्हें अनेक मठ-मन्दिरों के महन्तों ने अपने आश्रम देने, उनका महन्त बनाने की इच्छा व्यक्त की, परन्तु ऋषि ने उन सबको ठुकरा दिया। राजे-महाराजे, सेठ-साहूकारों ने उन्हें अपने यहाँ आश्रय देने का प्रस्ताव किया, परन्तु ऋषि ने उनको भी अस्वीकार कर दिया। ऐसा नहीं है कि ऋषि को इसकी आवश्यकता न रही हो। ऋषि ने वैदिक यन्त्रालय के लिये स्थान लिया, मशीनें खरीदीं, कर्मचारी रखे, परन्तु उसको अपने लिये बाधा ही समझा। पत्र लिखते हुए ऋषि ने लिखा- आज हम गृहस्थ हो गये, आज हम पतित हो गये। इसमें उनकी इस आवश्यकता के पीछे की विवशता प्रकाशित होती है।

एक ऋषि भक्त मास्टर सुन्दरलाल जी ने ऋषि को लिखा- आपकी लिखी-छपी पुस्तकें मेरे घर में रखी हैं, उन्हें कहाँ भेजना है? तब ऋषि ने बड़ा मार्मिक उत्तर सुन्दरलाल को लिखा- मेरा कोई घर नहीं है, तुम्हारा घर ही मेरा घर है, मैं पुस्तकों को कहाँ ले जाऊँगा? इस बात से उनकी निःस्पृहता की पराकाष्ठा का बोध होता है।

पशुओं के अधिकारों की रक्षा- बहुत लोग द परोपकार का भाव रखते हैं, वे प्राणियों पर दया करते उनकी रक्षा भी करते हैं, परन्तु ऋषि पशुओं के अधिक की लड़ाई लड़ते हैं। पशुओं की रक्षा के लिए समाज सभी वर्गों से आग्रह करते हैं, उनके विनाश से होने वा हानि की चेतावनी देते हैं, ऋषिवर कहते हैं- गौ आ पशुओं के नाश से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है ऋषि ने कहा है- हे धार्मिक सज्जन लोगो! आप इन पशुअ की रक्षा तन, मन और धन से क्यों नहीं करते? हाय!! ब शोक की बात है कि जब हिंसक लोग गाय, बकरे आ पशु और मोर आदि पक्षियों को मारने के लिये ले जाते है तब वे अनाथ तुम हमको देखके राजा और प्रजा पर ब शोक प्रकाशित करते हैं-कि देखो! हमको बिना अपरा बुरे हाल से मारते हैं और हम रक्षा करने तथा मारनेवाले को भी दूध आदि अमृत पदार्थ देने के लिये उपस्थित रहन चाहते हैं और मारे जाना नहीं चाहते। देखो! हम लोगों क सर्वस्व परोपकार के लिये है और हम इसलिये पुकारते है कि हमको आप लोग बचावें। हम तुम्हारी भाषा में अपना दुःख नहीं समझा सकते और आप लोग हमारी भाषा नही जानते, नहीं तो क्या हममें से किसी को कोई मारता तो हम भी आप लोगों के सदृश अपने मारनेवालों को न्याय व्यवस्थ से फाँसी पर न चढ़वा देते? हम इस समय अतीव कष्ट मे हैं, क्योंकि कोई भी हमको बचाने में उद्यत नहीं होता।

ऋषि केवल धार्मिक आधार पर ही प्राणि-रक्षा की बात नहीं करते, वे उनके अधिकार की बात करते हैं समाज को उनके हानि-लाभ का गणित भी समझाते हैं एक गाय के मांस से एक बार में कितने व्यक्तियों की तृप्ति होती है? इसके विपरीत एक गाय अपने जीवन में कितना दूध देती है? उसके कितने बछड़े-बछड़ियाँ होती हैं, बैलो से खेती में कितना अन्न उत्पन्न होता है, गाय के गोबर-मूत्र से भूमि कितनी उर्वरा होती है? ऐसा आर्थिक विश्लेषण किसी ने उनसे पूर्व नहीं किया। जहाँ तक प्राणियों के लिये ऋषि के मन में दया भाव का प्रश्न है, वह दया तो केवल दयानन्द के ही हृदय में हो सकती है। ऋषि लिखते हैं- भगवान! क्या पशुओं की चीत्कार तुम्हें सुनाई नहीं देती

? हे ईश्वर! क्या तुम्हारे न्याय के द्वार इन मूक पशुओं के ये बन्द हो गये हैं?

अनाथ एवं अवैध सन्तानों के अधिकारों की रक्षा- ऋषि ने समाज में जो बालक-बालिकायें, माता-पिता और रक्षक-विहीन, अभाव-पीड़ित, प्रताड़ित और उपेक्षित , उनके अधिकारों के लिये सरकार से लड़ाई लड़ी।

जो बालक अविवाहित माता-पिता की सन्तान हैं, माज उन्हें हीन समझता है, उन बालकों को अवैध कहकर, नकी उपेक्षा करता है। ऋषि कहते हैं- माता-पिता का ह कार्य समाज की दृष्टि में अवैध कहा जाता हो, परन्तु समें सन्तान किसी भी प्रकार से दोषी नहीं है। सभी ालक ईश्वर की व्यवस्था से तथा प्रकृति के नियमानुसार ो उत्पन्न होते हैं, अत: वे समाज में समानता के अधिकारी । उनकी उपेक्षा करना, उनके साथ अन्याय है।

कोई शिष्य, उत्तराधिकारी नहीं बनाया- सभी मत-सम्प्रदाय परम्परा के व्यक्ति अपने उत्तराधिकारी नियुक्त करते हैं। ऋषि के समय उनके भक्त, शिष्य, अनुयायी थे, रन्तु किसी भी व्यक्ति को उन्होंने अपना उत्तराधिकारी हीं बनाया। उन्होंने अपनी वस्तुओं और धन का उत्तराधिकारी परोपकारिणी सभा को बनाया। अपने धन को सौंपते हुए, वेद के प्रचार-प्रसार और दीन-अनाथों की क्षा का उत्तरदायित्व दिया। विचारों और सिद्धान्तों के चार के लिये आर्यसमाज के दस नियम और उनका ालन करने के लिये आर्यसमाज का संगठन बनाया।

धार्मिक क्षेत्र में प्रजातन्त्र का प्रयोग- धर्म और आस्था के क्षेत्र में उत्तराधिकार और गुरु-परम्परा का स्थान मुख्य रहा है। शासन-परम्परा में ऋषि के समय विदेशों में प्रजातन्त्र स्थापित हो रहा था। भारत में राजतन्त्र ही चल रहा था। अंग्रेज लोग राजाओं के माध्यम से ही भारतीय प्रजा र शासन कर रहे थे। जहाँ राजा नहीं थे, वहाँ अंग्रेज अधिकारी ही शासक थे। शासन में जनता की कोई भागीदारी नहीं थी। ऋषि का कार्य क्षेत्र धार्मिक और सामाजिक था। स क्षेत्र में प्रजातन्त्र की बात नहीं की जाती थी, गुरु-महन्त जिसको उचित समझे, उसे अपना उत्तराधिकारी चुन सकते थे। सभी लोग गुरु के आदेश को शिरोधार्य करके उसका अनुसरण करते थे, आज भी ऐसा हो रहा है।

धार्मिक क्षेत्र आस्था और श्रद्धा का क्षेत्र है। व्यक्ति के मन में जिसके प्रति आस्था हो, वह उसको गुरु मान लेता है, उसका अनुयायी हो जाता है, परन्तु स्वामी जी ने इस क्षेत्र में तीन बातों का समावेश किया- प्रथम बात, किसी के प्रति श्रद्धा करने से पूर्व उसकी परीक्षा करना, किसी भी विचार को परीक्षा करने के उपरान्त ही स्वीकार करना। आज तक किसी गुरु ने शिष्य को यह अधिकार नहीं दिया कि वह गुरु की बातों की परीक्षा करे, उसके सत्यासत्य को स्वयं जाँचे। यही कारण है कि स्वामी जी के शिष्यों में गुरुडम को स्थान नहीं है।

ऋषि की दूसरी विलक्षणता- परीक्षा करने की योग्यता मनुष्य में तब आती है, जब वह ज्ञानवान होता है और मनुष्य को ज्ञानवान गुरु ही बनाता है। ऋषि दयानन्द अपने शिष्यों, भक्तों और अनुयायी लोगों को पहले ज्ञानवान बनाते हैं, फिर उस ज्ञान से अपने विचार की परीक्षा करने को कहते हैं।

सामान्य गुरु लोग अपने भक्तों और शिष्यों को ज्ञान का ही अधिकार नहीं देते, परीक्षा करने के अधिकार का तो प्रश्न ही नहीं उठता। ऋषि मनुष्य मात्र को ज्ञान का अधिकारी मानते हैं, अत: ज्ञान का उपयोग परीक्षा में होना स्वाभाविक है। तीसरी बात ऋषि ने धार्मिक क्षेत्र में की, वह है प्रजातान्त्रिक प्रणाली का उपयोग। धार्मिक लोग सदा समर्पण को ही मान्यता देते हैं, वहाँ गुरु परम्परा ही चलती है, परन्तु ऋषि ने धार्मिक संगठनों की स्थापना कर उनमें प्रजातन्त्रात्मक पद्धति का उपयोग किया। यह विवेचना का विषय हो सकता है कि यह पद्धति सफल है या असफल है। मनुष्य की बनाई कोई भी वस्तु शत-प्रतिशत सफल नहीं हो सकती, अतएव समाज में नियम, मान्यता, व्यवस्थाएँ सदा परिवर्तित होती रहती हैं। गुरुडम की समाप्ति प्रजातन्त्र के बिना सम्भव नहीं थी, अत: ऋषि ने इसे महत्त्व दिया है। प्रजातन्त्रात्मक पद्धति की विशेषता है कि इसमें योग्यता का सम्मान होता है। इसमें हम देखते हैं कि योग्यता के कारण एक व्यक्ति जो सबसे पीछे था, वह इस पद्धति में एक दिन सबसे अग्रिम पंक्ति में दिखाई देता है।

मूर्ति-पूजा- मूर्ति पूजा एक ऐसा प्रश्न है, जिसके निरर्थक होने में बुद्धिमान सहमत हैं, परन्तु व्यवहार में स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं। ऋषि ने मूर्ति-पूजा को पाप और अपराध कहा, इसके लिये पूरे देश में शास्त्रार्थ किये। काशी के विद्वानों को ललकारा। ऋषि मूर्ति-पूजा के विरोध के प्रतीक बन गये। समाज में समाज-सुधारकों

की बड़ी परम्परा है, प्राय: सभी ने उसको यथावत् स्वीकार करके ही अपनी बात रखी, जिससे उनके अनुयायी बनने में जनता को किसी प्रकार की कठिनाई नहीं आई। लोगों ने अपने भगवानों की पंक्ति में सुधारकों को भी सम्मानित स्थान दे दिया। आश्चर्य है, आचार्य शंकर जैसे विद्वान्, जिनके लिये अखण्ड एकरस ब्रह्म जिसके सामने जीना-मरना, संसार का होना, न होना कोई अर्थ नहीं रखता, वे शिव की मूर्ति को भगवान मानकर उसकी पूजा-अर्चना करना ही अपना धर्म मानते हैं। **तस्मै नकाराय नम: शिवाय** जैसा स्तोत्र रचते हैं। मूर्ति-पूजा सबसे बड़ा पाखण्ड है, जिसमें एक पत्थर भगवान का विकल्प तो बन सकता है, परन्तु एक नौकर या एक गाय का विकल्प नहीं बन सकता। दुकान पर दुकानदार पत्थर के नौकर को बैठाकर अपना काम नहीं चला सकता और न ही पत्थर की गाय से दूध प्राप्त कर सकता है। प्रश्न यह है कि पत्थर का भगवान संसार की सारी वस्तुयें दे सकता है तो पत्थर की गाय दूध क्यों नहीं दे सकती या मनुष्य पत्थर के नौकर को दुकान पर छोड़कर बाहर क्यों नहीं जा सकता?

ऋषि दयानन्द ने मूर्ति-पूजा को धूर्तता और मूर्खता का सम्मेलन बताया है। मन्दिर को चलाने वाला चालाक दुकानदार होता है और पूजा कर चढ़ावा चढ़ाने वाला भक्त भय, लोभ में फँसा अज्ञानी। यही मूर्ति-पूजा का रहस्य है, जिसे सभी जानते हैं, परन्तु इसको घोषणापूर्वक कहना ऋषि का ही कार्य है।

राष्ट्रीयता- जिन्हें हम समाज-सुधारक या धार्मिक-नेता कहते हैं, वे राजनीति और शासन के सम्बन्ध में चुप रहना ही अच्छा समझते हैं। उनकी उदासीन या सर्वमैत्री भाव वाली दृष्टि **कोउ नृप होऊ हमें का हानि** वाली रहती है, परन्तु ऋषि ने अपने ग्रन्थ में राजनीति पर एक अध्याय लिखा और अपने लेखन, भाषण में उनके उचित-अनुचित पर टिप्पणी भी की। ऋषि दयानन्द अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं- विदेशी राज्य माता-पिता के समान भी सुखकारी हो, तो भी अपने राज्य से अच्छा नहीं हो सकता। आपने अंग्रेजी शासन की चर्चा करते हुए कहा कि अंग्रेज अपने कार्यालय में देसी जूते को सम्मान नहीं देता, वह अंग्रेजी जूता पहनकर अपने कार्यालय में आने की आज्ञा देता है। यह लिखकर उन्होंने स्वदेशी वस्तुओं के प्रति प्रेम प्रकाशित किया है।

ऋषि अंग्रेज अधिकारी द्वारा शासन में किसी प्रव की असुविधा न होने की बात पर उसके लम्बे शासन प्रार्थना का प्रस्ताव ठुकरा कर प्रतिदिन भगवान से देश स्वतन्त्र होने की प्रार्थना करने की बात करते हैं। य कारण है कि भारत के किसी मन्दिर में 'भारत माता व जय' नहीं बोली जाती, परन्तु आर्यसमाज मन्दिरों में प्रत्ये सत्संग के बाद **भारत माता की जय** बोलना आर्यसमा की धार्मिक परिपाटी का अङ्ग है। यह बात सभी समाज सुधारकों से ऋषि को अलग करती है।

वेद के पढ़ने का अधिकार- भारत को आज भ वेद के बिना देखना सम्भव नहीं, भारत के सभी सम्प्रदा वेद से सम्बन्ध रखते हैं, उनका अस्तित्व वेद से है। ज आस्तिक सम्प्रदाय हैं, वे वेद में आस्था रखते हैं, वेद क पवित्र पुस्तक और धर्म ग्रन्थ मानते हैं, दूसरे सम्प्रदाय वे को धर्मग्रन्थ नहीं मानते, स्वयं को वेद-विरोधी स्वीका करते हैं। सबसे विचारणीय बात है कि वेद को मानने वाले अपने को आस्तिक कहते हैं, वेद न मानने वाले को लोग नास्तिक कहते हैं। सामान्य रूप से ईश्वर को मानने वाले आस्तिक कहलाते हैं। ईश्वर की सत्ता को जो लोग स्वीका नहीं करते, उनको नास्तिक कहा जाता है। कुछ लोग वेद को स्वीकार नहीं करते, परन्तु किसी-न-किसी रूप में ईश्वर की सत्ता मानते हैं, अत: ऐसे लोगों को भी नास्तिकों की श्रेणी में रखा गया। इस देश के आस्तिक भी नास्तिक भी, वेद से जुड़े होने पर भी दोनों का वेद से कोई सम्बन्ध शेष नहीं है। वेद-समर्थक भी वेद नहीं पढ़ते, वेद-विरोधी भी वेद को बिना पढ़े समर्थकों की बातें सुनकर ही वेद का विरोध करते हैं।

ऋषि दयानन्द इन दोनों से विलक्षण हैं। उनके वेद सम्बन्धी विचारों का विरोध वेद के समर्थक भी करते हैं और वेद विरोधी भी। दोनों ऋषि दयानन्द के विरोधी हैं और इसी कारण ऋषि दयानन्द दोनों का ही विरोध करते हैं।

ऋषि दयानन्द की इस विलक्षणता का कारण उनकी वेद-ज्ञान की कसौटी है। लोग कहते हैं- ऋषि दयानन्द ने वेद कब पढ़े हैं? गुरु विरजानन्द के पास तो वे केवल ढाई वर्ष तक रहे, फिर वेद कब पढ़े? इसका उत्तर है- दण्डी विरजानन्द के पास ऋषि दयानन्द ने वेदार्थ की कुञ्जी प्राप्त की, वह कुञ्जी है- आर्ष और अनार्ष की। हमारे समाज मे

ृत में लिखी बात को प्रमाण माना जाता है। आर्ष-
र्ष में विभाजन करने से मनुष्यकृत सारा साहित्य अप्रमाण
ट में आ जाता है। अब जो शेष साहित्य बचा है, उसके
ृकरण की कुञ्जी शास्त्रों ने दी है। ऋषि दयानन्द ने
को आधार बनाकर सारे वैदिक साहित्य को स्वत:
ण और परत: प्रमाण में बाँट कर जो कुछ वेद के
व्यों से विरुद्ध लिखा गया है, उसे निरस्त कर
ामाणिक घोषित कर दिया। जो कुछ इनमें वेद विरुद्ध
वा गया, वह दो प्रकार का है, एक- स्वतन्त्र ऋषियों के
। पर लिखे गये ग्रन्थ तथा दूसरे- ऋषि ग्रन्थों में की गई
नावट, जिसे शास्त्रीय भाषा में प्रक्षेप कहते हैं। ऋषि ने
प्रक्षेप को परत: प्रमाण मानकर जो कुछ वेदानुकूल
ीं है, उसे त्याज्य घोषित कर दिया। इस प्रकार ऋषि को
तक पहुँचना सरल हो गया।

अब बात शेष रही, वेद किसे माना जाय? पौराणिक
ग सब कुछ को वेद का नाम देकर सारा पाखण्ड ही
दिक बना डालते हैं। ऋषि ने मूल वेद संहिता और शाखा
ह्मण भाग को वेद से भिन्न कर दिया। आज हमारे पास
यजुर्वेद हैं, इनमें किसे वेद स्वीकार किया जाय, इस
ऋषि दयानन्द की युक्ति बड़ी बुद्धि ग्राह्य लगती है। वे
हते हैं- शुक्ल और कृष्ण शब्द ही इसके निर्णायक हैं।
क्ल प्रकाश होने से श्रेष्ठता का द्योतक है, कृष्ण प्रकाश
ृत होने से कम होने का। दूसरा तर्क है, जिसमें मूल है,
शुक्ल तथा जिसमें व्याख्या है, उसे कृष्ण कहा गया है।

ऋषि समस्त वेद को वेदत्व के नाते एक स्वीकार
रते हैं तथा शेष वैदिक साहित्य को वेदानुकूल होने पर
ाण स्वीकार करते हैं। जहाँ तक हमारे पौराणिक लोग
वे वेद को तो ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं, परन्तु वेद में सब
छ उचित-अनुचित है, यह भी उन्हें स्वीकार्य है। ऋषि
ानन्द जो ईश्वर और प्रकृति के नियमों के अनुकूल है,
ी ही वेद मानते हैं। जो ईश्वरीय ज्ञान प्रकृति नियमों के
रुद्ध है, उसे वेद प्रोक्त नहीं माना जा सकता।

वेद के अर्थ विचार की जो कसौटी ऋषि दयानन्द ने
तुत की है, वह भी शास्त्रानुकूल है। समस्त वेद एक
ने से तथा वेद एक बुद्धिपूर्ण रचना होने से वेद में परस्पर
रोधी बातें नहीं हो सकती तथा वेद के शब्दों का अर्थ
ज की लौकिक संस्कृत के शब्द कोष से निर्धारित नहीं
या जा सकता। शब्द का अर्थ पूरे मन्त्र में घटित होना
चाहिए तथा मन्त्र का अर्थ भी बिना प्रसंग के नहीं किया जा सकता। ऐसी परिस्थिति में हमारे पास वेदार्थ करने का जो उपाय शेष रहता है, वह बहुत सीमित है। कोष के नाम पर हमारे पास निघण्टु निरुक्त है। उसके अतिरिक्त वैदिक साहित्य में आये शब्दों के निर्वचन हमारा मार्गदर्शन करते हैं। हमारे पास वेदार्थ करने का एक और उपाय है- वेदार्थ में यौगिक प्रक्रिया का प्रयोग करना। लोक में प्राय: रूढ़ि, योग-रूढ़ शब्दों से काम चलाया जाता है, परन्तु रूढ़ि शब्दों से वेदार्थ करना, वेद के साथ अन्याय है, अत: यास्कादि ऋषि वेदार्थ के लिये यौगिक प्रक्रिया को अनिवार्य मानते हैं।

ऋषि दयानन्द इसी आधार पर वेदार्थ को इस युग के अनुसार प्रस्तुत करने में समर्थ हो सके।

ऋषि दयानन्द की वेद के सम्बन्ध में एक और विलक्षणता है। वेद के भक्त वेद को धर्मग्रन्थ भी मानते हैं, परन्तु वेद को धर्मग्रन्थ स्वीकार करने वालों को उसे पढ़ना तो दूर, उसके सुनने तक का अधिकार देने को तैयार नहीं। इसके विपरीत वेद पढ़ने-सुनने पर दण्डित करने का विधान करते हैं। इस विषय में ये लोग कुरान एवं मोहम्मद साहब से भी आगे पहुँच गये। मनुष्य के धार्मिक होने के लिये धर्मग्रन्थ होता है, धर्मग्रन्थ को जाने बिना कोई भी धर्माधर्म को कैसे जान सकता है? यह ऐसा प्रयास है, जैसे कोई बालक अपने माता-पिता से बात न कर सके। उसके शब्द न सुने और उनकी बात माने। ऋषि दयानन्द वेद मन्त्र से ही इस धारणा का खण्डन कर देते हैं। वे कहते हैं- वेद ईश्वरीय ज्ञान है, संसार ईश्वर का है। प्रकृति के सभी पदार्थों पर सबका समान अधिकार-जल, वायु, पृथ्वी, आकाश सभी कुछ पर। बिल्कुल वैसे ही, जैसे सन्तानों का अपने पिता की सम्पत्ति पर अधिकार होता है, अत: प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वेद रूपी इस सम्पत्ति को अपनी सन्तान, परिजन, सेवकों को प्रदान करे। ऋषि इसके लिए यजुर्वेद का प्रमाण देते हैं-

यथेमां वाचं कल्याणी मा वदानि जनेभ्य:
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च
प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे काम:
समृद्ध्यतामुपमादो नमतु।

- डॉ. धर्मवीर

स्तुता मया वरदा वेदमाता-२-३

देवा इवामृतं रक्षमाणाः सायं प्रातः सौयसो वोऽस्त।

संज्ञान सूक्त के अन्तिम मन्त्र की दूसरी पंक्ति में दो बातों पर बल दिया गया है। एक में कहा है कि परिवार में प्रेम का वातावरण सदा ही रहना चाहिए। यहाँ दो पद पढ़े गये हैं, सायं प्रातः, अर्थात् हमारे परिवारिक वातावरण में प्रेम का प्रवाह प्रातः से सायं तक और सायं से प्रातः तक प्रवाहित होते रहना चाहिए। यह प्रेम सौमनस्य से प्रकाशित होता है। हमारे मन में सद्भाव का प्रवाह होगा, सद्विचारों की गति होगी तो सौमनस्य का भाव बनेगा। प्रेम के लिये शारीरिक पुरुषार्थ तो होता ही है। जब हम किसी की सहायता करते हैं, सेवा करते हैं, छोटों से स्नेह और बड़ों का आदर करते हैं, तब हमारे परिवार में सौमनस्य का स्वरूप दिखाई पड़ता है।

हम यदि सोचते हैं कि प्रेम हमारे परिवार के सदस्यों में स्वतः बना रहेगा, कोई हमारा भाई है, बेटा है, पिता या पुत्र है, इतने मात्र से परस्पर प्रेम उत्पन्न हो जायेगा, यह अनिवार्य नहीं है। हम पारिवारिक सम्बन्धों में प्रेम की सहज कल्पना करते हैं, परन्तु परिवार का प्राकृतिक सम्बन्ध प्रेम उत्पन्न करने की सहज परिस्थिति है। इसमें प्रेम के अंकुर निकलते हैं, जिन्हें विकसित किया जा सकता है।

प्रेम का अंकुरण विचारों से होता है, मनुष्य अपनी सेवा सहायता चाहता है, अपना आदर, सम्मान चाहता है, अपनी प्रशंसा की इच्छा करता है। यह विचार हमें सुख देता है, कोई व्यक्ति दृष्टि सेवा सहायता करता है, सम्मान देता है। ऐसे सुख की कामना सभी में होती है, अतः जो भी किसी के प्रति ऐसा करने का भाव रखेगा, उसके मन में इसी प्रकार आदर के भाव उत्पन्न होंगे। आप किसी का आदर करते हैं, दूसरा व्यक्ति भी आपका आदर करता है। आप किसी की सहायता करते हैं, दूसरे व्यक्ति के मन में भी आपके प्रति सहानुभूति उत्पन्न होती है। आवश्यकता पड़ने पर वह भी आपकी सेवा के लिये तत्पर रहता है।

मनुष्य के मन में स्वार्थ की पूर्ति की इच्छा स्वाभाविक होती है। स्वार्थ पूर्ण करने के लिये उपदेश करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। परोपकार, धर्म, सेवा, आदर आदि में कार्य बुद्धिपूर्वक सोच-विचार कर ही किये जा सकते हैं, अतः ये विचार हमारे हृदय में सदा बने रहें, इसका प्रयत्न करना पड़ता है। इसी के उपाय के रूप में कहा गया है कि हमें सौमनस्य की निरन्तर रक्षा करनी होती है, तभी सौमनस्य सम्पूर्ण समय बना रह सकता है।

सौमनस्य बनाना पड़ता है, उसके लिये बहुत सावध सतर्कता की आवश्यकता होती है। मनुष्य में स्वार्थ की वृत्ति सदा सक्रिय रहती हैं। उनपर नियन्त्रण रखने के लिये स सजग रहने की आवश्यकता है। इसके लिये वेद में उदाह दिया गया है, जैसे देवता लोग अमृत की रक्षा में तत्पर रहते वैसे मनुष्य को भी अपने वातावरण में सद्भाव सौमनस्य व रक्षा करने के लिये तत्पर रहना चाहिए। पुराणों में कथा आ है- देवताओं और असुरों ने मिलकर समुद्र मन्थन किया अं सोलह पदार्थ प्राप्त किये। जब समुद्र से अमृत निकला देवताओं ने उस पर अपना अधिकार कर लिया। इस बात व जैसे ही असुरों को ज्ञान हुआ, वे अमृत प्राप्त करने के लि देवताओं से संघर्ष करने लगे। जहाँ-जहाँ इस संघर्ष के कार अमृत के बिन्दु गिरे, वहाँ-वहाँ अच्छी-अच्छी चीजें बनी उत्पन्न हुई उन पदार्थों में कोई न्यूनता है तो असुरों के स्पर्श व कारण, जैसे लशुन की अमृत से उत्पत्ति मानी गई है, परन इसमें दुर्गन्ध का कारण इससे असुरों का स्पर्श कहा गया है

प्रकृति में देवता निरन्तर नियमपूर्वक कार्य करते हैं, तभ संसार नियमित रूप से चल रहा है। यदि एक क्षण के लि भी देवता अपना काम छोड़ दें तो संसार में प्रलय उत्पन्न हो जायेगी। हम सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, वायु आदि को देखकर इस बात का निश्चय भली प्रकार कर सकते हैं। इसी कारण व्रत धारण करते समय देवताओं के व्रत धारण को उदाहरण के रूप में स्मरण किया जाता है, 'अग्ने व्रतपते' हे अग्नि! तू व्रत पति है तेरा व्रत भी नहीं टूटता मैं भी तेरे समान व्रत पति ब कहा गया है।

देवताओं का एक नाम अनिमेष है। वे कभी पलक भ नहीं झपकाते, सदा सतर्क, सावधान रहते हैं। वैसे भी परिवा समाज में सौमस्य बनाये रखने के लिये मनुष्य को सदा सावधा रहना चाहिए, सौमनस्य बना रह सकता है। देवताओं क देवत्व अमृत से ही है, अमृत नहीं है तो उनका देवत्व ह समाप्त हो जाता है। और अमरता है- व्रत न टूटना। व्रत टूट ही मृत्यु है........ हमें देवताओं के समान अपने सदविचारों क सदा रक्षा करनी चाहिये, तभी सौमनस्य की प्राप्ति सम्भव है

क्रमशः ......

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

श्री पं. भानुदत्त जी का वह ऐतिहासिक लेख:- र्य समाज के निष्ठावान् कार्यकर्त्ताओं, उपदेशकों, प्रचारकों संन्यासियों से हम एक बार फिर सानुरोध यह निवेदन गे कि 'समाचार प्रचार' की बजाय सैद्धान्तिक प्रचार शक्ति लगाकर संगठन को सुदृढ़ करें। समाज में जन क्ति होगी तो राजनीति वाले पूछेंगे। राजनेता वोट व नोट शक्ति को महत्त्व देंगे। विना शक्ति के राजनेताओं का छलग्गू बनना पड़ता है। आर्य समाज को अपने मूलभूत द्धान्तों की विश्वव्यापी दिग्विजय और मौलिकता के थ-साथ अपने स्वर्णिम इतिहास को प्रतिष्ठापूर्वक प्रचारित रने पर अपनी शक्ति लगानी चाहिये।

'परोपकारी' के पाठकों को यह जानकारी दी जा की है कि भारत सरकार ने पं. श्रद्धाराम फिलौरी की एक वनी छापी है। इसमें बिना सोचे-विचारे ऋषि दयानन्द निराधार प्रहार किये गये हैं। 'इतिहास की साक्षी' नाम पुस्तक छपवाकर सभा ने पं. श्रद्धाराम के शब्दों में षि की महानता व महिमा तो दर्शा ही दी है। साथ ही पं. द्धाराम के साथी पं. गोपाल शास्त्री जम्मू एवं पं. भानुदत्त के ऋषि के प्रति उद्‌गार विचार भी दे दिये हैं।

यहाँ एक तथ्य का अनावरण करना आवश्यक व नयोगी रहेगा। हम सबको पूरे दलबल से इसे प्रचारित रना होगा। परोपकारी में प्रकाशित काशी शास्त्रार्थ पर तिक्रिया देते हुए एक सुयोग्य सज्जन ने एक प्रश्न पूछा तो से बताया गया कि इस घटना के १२ वर्ष पश्चात् देश के र्धन्य सैंकड़ों विद्वानों का जमघट वेद से मूर्तिपूजा का एक प्रमाण न दे सका। इससे बड़ी ऋषि की विजय और या होगी?

सत सभा लाहौर के प्रधान संस्कृतज्ञ पं. भानुदत्त मूर्तिपूजा पक्ष में नहीं थे। पं. श्रद्धाराम आदि पण्डितों के दबाव में होंने ऋषि का विरोध करने के लिए नवगठित मूर्तिपूजकों सभा का सचिव बनना स्वीकार कर लिया। प्रतिमा जन के पक्ष में व्याख्यान भी दिये।

जब कलकत्ता की सन्मार्ग संदर्शिनी सभा ने महर्षि बुलाये बिना और उनका पक्ष सुने बिना उनके विरुद्ध व्यवस्था (फतवा) दी तब पं. भानुदत्त जी ने बड़ी निडरता से महर्षि के पक्ष में एक स्मरणीय लेख दिया। इनकी आत्मा देश भर के दक्षिणा लोभी पण्डितों की इस धाँधली को सहन न कर सकी।

श्री पं. भानुदत्त जी का कड़ा व खरा लेख कलकत्ता के ही एक पत्र में उक्त सभा के १९ दिन पश्चात् प्रकाशित हुआ था। आपने लिखा, "**हा नारायण! यह क्या हो रहा है? एक पुरुष है और १०० ओर से उसे घसीटता है (अर्थात् घसीटा जाता है)। राजा राममोहन राय उठे, उसके बाद देवेन्द्रनाथ ठाकुर आये, फिर केशवचन्द्र सेन आये, और उनके बाद स्वामी दयानन्द जाहिर हो रहे हैं। सम्पादक महाशय! जब यह दशा हमारे देश की है, तो फिर बिना तर्क और वादियों के ग्रन्थ देखे घर में ही फैसला कर देना किसी प्रकार से योग्य नहीं प्रतीत होता, और न तो इससे वादियों के मत का खण्डन और साधारण समाज की सन्तुष्टि ही हो सकती है। सब यही कहेंगे कि सब कोई अपने-अपने घर में अपनी स्त्री का नाम 'महारानी' रख सकते हैं। अवतार आदि के मानने वालों तथा वेद विरुद्ध मूर्तिपूजा के स्थापन करने वालों को पूछो कि कभी दयानन्द कृत 'सत्यार्थप्रकाश' और 'वेदभाष्य' का प्रत्यक्ष विचार भी किया है? ....प्रिय भ्राता! यदि कोई मन में दोख न करे तो ऐसी सभा के वादियों को इस बात के कहने का स्थान मिलता कि सरस्वती जी (ऋषि दयानन्द) के सम्मुख होकर शास्त्रार्थ कोई नहीं करता, अपने-अपने घरों में जो-जो चाहे ध्रुपद गाते हैं।**"[१]

जिस पं. भानुदत्त को ऋषि के मन्तव्यों के खण्डन के लिए आगे किया गया, वही खुलकर लिख रहा है कि महर्षि के सामने खड़े होने का किसी में साहस ही नहीं। ऋषि जीवन के ऐसे-ऐसे प्रेरक प्रसंग तो वक्ता भजनोपदेशक सुनाते नहीं। ऋषि की वैचारिक मौलिकता व दिग्विजय की चर्चा नहीं होती। अज्ञात जीवनी की कपोल कल्पित कहानियाँ सुनाकर जनता को भ्रमित किया जाता है।

इतिहास के नाम पर इतना अनर्थ:- ऋषिवर उदयपुर

पधारे तो महाराणा सज्जन सिंह ऋषि के उदयपुर पहुँचने के अगले ही दिन दर्शनार्थ आ गये और जोधपुर के जसवन्त सिंह २७ दिन के पश्चात् मिलने आये। ऋषि को विष दिया गया, तब राव राजा तेजसिंह व सर प्रतापसिंह कितनी बार और कब महाराज का पता करने आये? ऋषि को मृत्यु शय्या पर छोड़कर प्रतापसिंह जुआ खेलने पूना चला गया। इनका गुणगान करने वाले इन तथ्यों को छिपाते क्यों हैं? ऋषि भक्तों को इतिहास से हटावट करने वालों की पोल खोलनी होगी।

ऋषि की एक ओर दिग्विजय:- सर सैयद अहमद खाँ को ऋषि का भक्त प्रशंसक बताकर उनका गुणगान कराना भी एक फैशन-सा हो गया । श्री रामगोपाल का पठनीय ग्रन्थ 'इण्डियन मुस्लिम' पढ़ें। सर सैयद का गुणकीर्तन करने से न तो देश का हित हो रहा है और न ऋषि मिशन को लाभ मिल रहा है। लाभ तो अलगाववादी तत्त्वों को मिल रहा है। हमारे विचार में सर सैयद ने ऋषि की संगत का लाभ उठाकर इस्लाम को लाभान्वित किया है। उस दिग्विजय पर हमारे विचारकों-प्रचारकों को बोलना चाहिये। हमारे पुराने विद्वानों व शास्त्रार्थ महारथियों ने ५०-६० वर्ष पूर्व जितनी खोज कर दी, सो कर दी। अब इस विषय में क्या हो रहा है, ये सब जानते हैं। मैंने इस विषय में अब तक जो लिखा है उससे आगे कुछ और निवेदन किया जाता है। यह महर्षि का पुण्यप्रताप है कि सर सैयद अहमद ने मुसलमानों को यह सुझाया व समझाया:-

१. कुरान मजीद में बदर इत्यादि के युद्धों में फरिश्तों की सहायता का वर्णन मिलता है। इससे उन युद्धों में फरिश्तों का आना सिद्ध नहीं होता।

२. हजरत ईसा की बिना पिता के उत्पत्ति किसी भी प्रकार से सिद्ध नहीं होती।

३. नबी पर जो वही (ईश्वरीय ज्ञान-आयतें) नाजिल होती है, वह किसी सन्देशवाहक (फरिशता) के द्वारा नहीं उतरती। यह उसके हृदय में उतरती है।

४. कुरान से जिन्नों की सत्ता, उनमें भी नर व नारी का होना तथा आगे से उत्पन्न होना सिद्ध नहीं होता। जिन्न मनुष्य को हानि पहुँचा सकते हैं-ऐसी बातें जो कुरान में वर्णित हैं, सृष्टि नियम विरुद्ध हैं। कुरान के भाष्यकारों ने यहूदियों का अनुकरण करके ऐसी व्याख्यायें की हैं।

५. कुरान में पैगम्बर के किसी भी चमत्कार उल्लेख नहीं मिलता। चमत्कार नबूअत (Profhethoc की युक्ति नहीं हो सकती।

पाठकों को बता दें कि कुरान के एक भाष्यका कुरान में आये 'जिन्न' शब्द के बहुवचन 'जिन्नात' कतई कुछ भी अर्थ नहीं दिया। सर सैयद ने इनका उ से उत्पन्न होना तो झुठलाया ही है, साथ ही इनमें नर व न का होना भी नहीं माना। इस्लामी विचारधारा में सर सै की सोच ने जो हड़कम्प मचाया, यह महर्षि दयानन्द बहुत बड़ी दिग्विजय है।

यह भी स्मरण रहे कि कुरान में अल्लाह द्वारा धरती आकाश को छह दिन में बनाने का उल्लेख मिलता है। स सैयद ने इसका प्रयोजन भी यहूदियों के मत का प्रतिव करना ही बताया है।[१] प्रश्न यह है कि सर सैयद को भी य तभी सूझा, जब महर्षि ने ईसाई मत की इस मान्यता क खण्डन किया ।

सर सैयद ने भले ही सीधे वैदिक धर्म को ग्रहण न किया, उसने कुरान को एवं इस्लाम को वैदिक विचारधा के रंग में रंग दिया।

यह इतिहास नहीं, इतिहास का उपहास है:- दिह के करोलबाग क्षेत्र के एक माननीय, सुयोग्य और अनुभव आर्य पुरुष ने योगी श्री सच्चिदानन्द व आदित्यपाल कम्पन द्वारा प्रचारित 'योगी का आत्म चरित' पुस्तक में वर्णि सामग्री पर चलभाष पर कुछ चर्चा की। आपने कहा, "मु तड़प झड़प' पढ़े बिना चैन नहीं आता"। सन् १८५७ वे विप्लव में महर्षि के भाग लेने पर प्रकाश डालने क आपने कहा।

मेरा निवेदन है कि मेरठ से इस विषय की उत्त पुस्तक का नया संस्करण छप चुका है। स्वामी पूर्णनन्द ज महाराज ने इसमें दूध का दूध, पानी का पानी कर दिया है मैं भी श्री दीनबन्धु, सच्चिदानन्द महाराज व आदित्यपाल सिंह के एतद्विषयक दुष्प्रचार को एक षड्यन्त्र मानता हूँ आप निम्न बिन्दुओं पर विचार करें:-

१. ऋषि जी ने यह तथाकथित सामग्री अपने किस भक्त, शिष्य वैदिक धर्मी को क्यों न दिखाई या लिखवाई

२. ऋषि ने ठाकुर मुकन्दसिंह व भोपाल सिंह जी क अपने साहित्य के प्रसार के लिए कोर्ट में मुखतार बनाया

परोपकारिणी सभा का प्रधान महाराणा सज्जनसिंह जी को बनाया । इन्हें तो अपनी तीस वर्ष की घटनाओं का एक भी पृष्ठ न लिखवाया। इसका कारण क्या है?

३. ऋषि दयानन्द सरीखे दूरदर्शी ने एक ही को यह कहानी क्यों न लिखवाई? चार को क्यों लिखवाई? गोपनीयता क्या चार को लिखवाने से रह सकती थी?

४. इन चार ब्रह्मचारियों का ऋषि के नाम कभी कोई पत्र किसी ने देखा? क्या ऋषि ने इन्हें कभी कोई पत्र लिखा?

५. इन बगले भक्तों में से बंगाल से ऋषि की सेवा के लिए क्या कोई अजमेर पहुँचा?

६. महर्षि के दाहकर्म में ब्राह्म समाजी इस चौकड़ी में से अजमेर किसी ने दर्शन दिये क्या?

७. ऋषि के मुख से ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की बहुत प्रशंसा व बड़ाई इन धोखाधड़ी करने वालों ने करवाई है। इतिहास प्रदुषित करने वाले इन नवीन पुराणकरों को इतना भी तो पता नहीं कि कोलकाता की पौराणिकों की जिस सभी ने दक्षिणा लेकर ऋषि के विरुद्ध व्यवस्था (फतवा) दी थी उस व्यवस्था पर ईश्वरचन्द्र जी विद्यासागर तथा गो-मांस भक्षण के प्रचारक राजेन्द्र लाल मित्र के भी हस्ताक्षर थे।

८. ऋषि जब लंगोटधारी थे, वस्त्र नहीं पहनते थे, तब शरीर पर मिट्टी रमाते थे। इसी अवस्था में एक बार छलेसर पधारे। छलेसर वालों ने एक मूल्यवान् पशमीना बिछाकर उस पर बैठने की विनती की तो ऋषि ने कहा, यह ठीक नहीं। आपका मूल्यवान् पशमीना गन्दा हो जायेगा। उन्होंने अनुरोध करके वहीं बैठने पर बाध्य किया। छलेसर के ठाकुरों की सेवा के लिये ऋषि ने कभी गुणकीर्तन क्यों न किया? कोई आदर्श संन्यासी तिरस्कार से क्रुद्ध होकर किसी को कोसता नहीं और सत्कार पाकर किसी का भाट बनकर उनके गीत नहीं गाया करता। कोलकाता में कोई अपने यहाँ ठहराने को तैयार नहीं था। न की या नहीं? क्या ऋषि ने उन्हें कोसा? कहीं भी किसी से ऐसी किसी घटना की ऋषि ने कभी भी चर्चा नहीं की। ब्राह्म समाजियों ने बंगाल में की गई सेवाओं पर ऋषि के मुख से जो प्रशंसा करवाई है- यह ऋषि के चरित्र हनन का षड्यन्त्र है।

९. महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के तेहरवें समुल्लासः में बाइबल की दो आयतों की समीक्षाओं में दार्शनिक विवेचन के साथ सूली व साम्राज्य, विदेशी शासकों की न्यायपालिका व लूट खसूट पर कड़ा प्रहार करके इतिहास रचा है। भारत में अंग्रेजों के न्यायालयों व शोषण पर ऐसी तीखी आलोचना करने वाले प्रथम विचारक व देशभक्त नेता ऋषि दयानन्द थे। महर्षि की अज्ञात जीवनी का ढोल पीटने वालों के ज्ञात इतिहास से ऋषि की निडरता की इन दो समीक्षाओं के महत्त्व का पता ही न चला। इन पर न कभी कुछ लिखा व कहा गया।

१०. महर्षि जब जालंधर पधारे, तब भी विदेशी न्यायपालिका द्वारा गोरों के विदेशी के साथ भेदभाव पर कड़ा प्रहार किया।[३] भारतीय की हत्या के दोषी गोरे अपराधी को दोषमुक्त करने पर ऋषि के हृदय की पीड़ा का इन्हें पता ही न चला। पं. लेखराम धन्य थे जिन्होंने साहस करके यह घटना दे दी। फिर केवल लक्ष्मण जी ने यह प्रसंग लिखा। न जाने अन्य लेखकों ने इसे क्यों न दिया?

११. ऋषि की प्रतिष्ठा के लिए ऐसी सच्ची घटनायें क्या कम हैं? उन्हें महिमा मण्डित करने के लिए असत्य की झूठे इतिहास की आवश्यकता नहीं है।

महात्मा हंसराज के तीन कथनः- महात्मा हंसराज के व्याख्यानों व लेखों में मुझे तीन अनमोल मोती मिले। आपने कहा कि एक बार ला. सांईदास ऋषि का ऐश्वरवाद, उसकी ही उपासना पर व्याख्यान सुनकर भीड़ के साथ जब बाहर निकले तो एक ब्राह्म समाजी नेता ने भाषण सुनकर कहा कि मेरा तो अब तक सारा ही जीवन निरर्थक गया। मैंने जड़पूजा-मूर्तिपूजा का ऐसा खण्डन कभी नहीं किया, जैसा आज निर्भीक स्वामी दयानन्द ने किया है। वहाँ महात्मा जी ने इस ब्राह्म समाजी नेता का नाम नहीं दिया। मेरा मत है कि यह ला. काशीराम जी प्रधान पंजाब ब्रह्मसमाज हो सकते हैं। वह महर्षि की निडरता, विद्वत्ता व अटल ईश्वर विश्वास की बहुत प्रशंसा किया करते थे।

दूसरा कथन जो मुझे प्रेरणाप्रद लगता है, वह यह है कि महात्मा जी हजरत मुहम्मद की एक हदीस सुनाकर आर्यों के खरेपन की पहचान बताया करते थे। किसी ने मुहम्मद जी से पूछा कि आपकी सबसे प्यारी बीवी कौन है? प्रश्नकर्त्ता समझता था कि पैगम्बर को हजरत आयशा (जो सबसे छोटी थी) से अत्यधिक प्रेम है सो यह उसी

का नाम लेंगे, परन्तु रसूल अल्लाह ने हजरत खदीजा का नाम लिया और कहा कि वह उस समय मुझ पर ईमान लाई जब मुझे कोई नहीं जानता मानता था।

यह हदीस सुनाकर महात्मा जी कहा करते थे धर्मप्रचार- ऋषि के मिशन के लिए कौन कष्ट झेलता व समय देता है? जो ऋषि मिशन का दीवाना है, वही महात्मा जी की दृष्टि में बड़ा व आदरणीय है।

महात्मा जी का तीसरा प्रिय कथन मेरे लिये यह है कि हम यह चाहते हैं कि मेरा तो पाँव भी गीला न हो, परन्तु देश जाति का बेड़ा पार हो जाये।

आओ! हम सब सोचें कि हम भी क्या इसी श्रेणी में तो नहीं आते। वैदिक धर्म पर जब वार हो तो उत्तर दूसरे दें। वेद पर, ऋषि पर प्रहार हो या अंधविश्वासों से लड़ना हो- मर्तिपूजकों से, ईसाइयों से, मुसलमानों से, रजनीश आदि नास्तिकों, भोगवादियों व गुरुडम वाले तिलक कण्ठीधारी बाबाओं से, जातिवादी तत्त्वों पर लिखने बोलने के लिए कोई और आगे आये, परन्तु मैं अपने पद से चिपका रहूँ। कितने वर्षों तक आप प्रधान व मन्त्री रहे- यह कोई इतिहास नहीं। इतिहास दुःख कष्ट झेलने को कहते हैं। कभी किसी से टक्कर ली? कभी कोई अभियोग चला? भारत सरकार ने निजाम की जीवनी दिल्ली से छापी। उसको महिमा मण्डित किया फिर श्रद्धाराम की आड़ में ऋषि की निन्दा की। आपके मुख पर टेप लगी है। आप कुछ बोलने का साहस ही न कर पाये। उत्तर में दो पक्तियाँ तो लिख देते। भारत सरकार को एक रोष भरा पत्र तो लिख सकते थे। संघर्ष करना जिनके बस की बात नहीं जो घर में ही कलह जगाने के लिए बेचैन रहते हैं, उनकी करनी व कथनी से इतिहास नहीं बन सकता। ऐसे लोग रिपोर्ट का पेट तो भर सकते हैं, परन्तु इतिहास ऐसे लोगों को कूड़ेदान में फेंक देता है। इतिहास पं. लेखराम, श्याम भाई, भक्त फूलसिंह, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा नारायण सिंह व पं. रुचिराम ही रच सकते हैं। इतिहास निर्माता तो स्वामी चिदानन्द अनुभवानन्द जी थे, जिन्हें पद प्रेमियों ने विसार दिया है।

पाठकों से सस्नेह अनुरोध:- प्राय: हमारे प्रेमी पाठक चलभाष पर ही गम्भीर प्रश्नों का उत्तर माँगते हैं। उत्तर दिया जाये तो फिर पूरक प्रश्न पूछते जाते हैं। किसी विषय प परोपकारी द्वारा या सीधा लिखकर उत्तर देना ठीक है गाजियाबाद के एक भाई ने डॉ. सुरेन्द्र जी की मनुस्मृति प एक प्रश्न किया। वह सीधा प्रकाशक से या डॉ. सुरेन्द्र ज से भी पूछ सकते हैं। बहुत आवश्यक होगा तो मैं भ अपना मत दे दूँगा।

पाठक इतना तो सोचें कि मैं प्रातः तीन बजे उठक फिर सात बजे से सायं छह सात बजे तक लेखन कार्य खोया रहता हूँ। जब तक जीवन है अन्तिम श्वास तक सेव करने की चाह है। तीन-तीन, चार-चार पुस्तकें एक साथ छपने के लिए प्रेस में होती हैं। आचार्य प्रदीप जी जैसे विद्वान् का कहना कैसे टालूँ? आप पूज्य युधिष्ठिर मीमांसक जी का जीवन चरित्र लिखने को कह चुके हैं। हरिद्वार से एक महात्मा ५० बार स्वामी वेदानन्द जी पर एक ग्रन्थ लिखने की माँग कर चुके हैं। महर्षि दयानन्द जी प विदेशों से अलभ्य नये दस्तावेज आ चुके हैं। ऋषि पर यह नया अद्भुत ग्रन्थ परोपकारिणी सभा प्रकाशित करवायेगी हमारे कृपालु श्री जितेन्द्र जी गुप्त बठिण्डा ने भी एक उत्तम पुस्तक के लेखन का कार्य आरम्भ करवा रखा है। तड़प झड़प के लिए भी पढ़ना व चिन्तन करना पड़ता है। मान्य डॉ. रामप्रकाश जी जैसे विद्वान् ने एक छोटा-सा परन्तु महत्त्वपूर्ण कार्य सौंपा। उसके लिए सवा सौ वर्ष पूर्व के पत्रों की पड़ताल में लगना पड़ा। प्रमाद तो कभी किया नहीं। ऋषि मिशन के हित में न मुझसे होती नहीं। आर्य सज्जनों का स्नेह मेरे लिए एक टानिक है। प्रेमी पाठकों की शुभकामनायें ऊर्जा दे रही हैं। जीवन के ८५ वें वर्ष में उसी उत्साह से व्यस्त मस्त हूँ, जितना ५०-५५वर्ष पूर्व रह करता था।

सन्दर्भ

१. द्रष्टव्य 'भारत मित्र' दिनांक १० फरवरी १८८१ का अंक।

२. 'हयाते जावेद' सर सैयद की जीवनी ५२६-५२९ तक देखिये।

३. द्रष्टव्य सम्पूर्ण जीवन चरित्र महर्षि दयानन्द पृष्ठ ७३ भाग दूसरा।

- वेद सदन, अबोहर - १५२११६

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग—साधना शिविर

दिनांक : १२ से १९ जून, २०१६

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरित्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साथ अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. मार्च,२०१६ में होने वाली **सन्ध्या गोष्ठी** स्थगित की गई है। पुन: निर्धारण होने पर सूचित किया जायेगा।
२. अप्रैल, २०१६ **ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर,** सम्पर्क : ०९९५०९९९६७९ समय : मध्याह्न १.३० से २.३० बजे।
३. मई, २०१६ **आर्यवीर शिविर,** सम्पर्क- ०९९५०९९९६७९
४. मई, २०१६ **संस्कृत सम्भाषण शिविर,** सम्पर्क- ०९९५०९९९६७९
५. जून, २०१६ **आर्य वीराङ्गना शिविर,** सम्पर्क- ०९९५०९९९६७९
६. जून, २०१६- **योग-साधना शिविर (द्वितीय स्तर),** सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

विशेष- परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित पूर्व दो ध्यान-प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविरों में प्रथम व उच्च प्रथम श्रेणी प्राप्त प्रशिक्षकों के लिए भी योग साधना शिविर (द्वितीय स्तर) में भाग लेने का अवसर रहेगा।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या स ूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

ईश्वर की सिद्धि में प्रमाण है

- राजेन्द्रप्रसाद शर्मा

ईश-साक्षात्कार से संबंधित वेदों में अनेक मंत्र हैं। ऋ. - १-२-२ के अनुसार "**हे परमेश्वर आप हमें इतना बलशाली बनायें कि हम आपकी स्तुति करके आपका साक्षात्कार करें।**" ऋ. -१-७४-२-"**यः स्त्रीहितीषु पूर्व्यः संजग्मानासु कृष्टिषु। अरक्षद्दाशुषे गयम्।। अर्थात् हमारे पूर्वज विद्वानों ने ईश्वर का साक्षात्कार किया** "। इसी प्रकार से वेदों में अनेक मंत्र हैं। ईश-साक्षात्कार के बाद अगला चरण मोक्ष प्राप्ति का है, जिसके लिये वेदों में परमं पदं अथवा अमृतत्व लिखा है। जब ईश्वर न हो तो मोक्ष कौन देगा ? पूर्व में जो तपस्वी / संन्यासी / महात्मा हुए, उन्होंने ईश-साक्षात्कार किया है, जैसे गोस्वामी तुलसीदास ने "**तिलक देत रघुवीर**" लिखा है। एक संत को गधे में भगवान के दर्शन हुए। ये घटित घटनाएँ हैं।

बहुत से व्यक्ति साधना में आगे बढ़ने पर अथवा किसी प्रकार की शक्ति प्राप्त होने पर अपने को सर्वोपरि समझने लगते हैं, उनका आगे का मार्ग रुक जाता है, वे बहुत से व्यक्तियों के साथ होने वाली घटनाओं की अनदेखी करते हैं, अथवा विश्वास नहीं करते हैं। उदाहरण के तौर पर किसी-किसी व्यक्ति को रामेश्वरम् में गंगाजल चढ़ाते समय हृदय में पानी की धार जैसा अनुभव होता है। यह प्रत्यक्षतः ईश्वरीय प्रभाव है। वेदों के सूक्तों के जितने मंत्रद्रष्टा ऋषि थे, वे सभी ईश-साक्षात्कारी थे। यदि इस प्रकार के प्रमाणों को एकत्रित किया जाय तो एक बड़ी पुस्तक बनती है। इन प्रमाणों के बाद शंका करना उचित नहीं है। पदार्थ का सूक्ष्मतम कण इलेक्ट्रान से संबंधित प्रयोग गिने- चुने लोग ही करते हैं, लेकिन सभी व्यक्ति जिन्होंने कभी इलेक्ट्रान देखा नहीं है, वे भी इलेक्ट्रान को मानते हैं। इसी प्रकार जिन विशिष्ट व्यक्तियों को ईश-साक्षात्कार हुआ हैं, हमें भी ईश-साक्षात्कार मानना होगा। कुछ व्यक्ति आत्म साक्षात्कार को ही ईश-साक्षात्कार समझ लेते हैं, और प्रसिद्धि के चक्कर में पड़कर आगे साधना नहीं करते हैं। ईश-साक्षात्कार के लिये जो बातें आवश्यक हैं, जैसे संसार से विरक्ति, संसार की निस्सारता की भावना होना, ईश्वर में ही पूर्ण एकाग्रचित्त होना। इन्हें कहना आसान है, लेकिन पालन करना अत्यन्त कठिन है। ईश - साक्षात्कार को हम दुरूह समझ लेते हैं, तभी उक्त प्रकार की बातें उठती हैं। आज की विषम परिस्थितियों में एकाग्रचित्त होना अत्यधिक कठिन है। एकांत नहीं है, जंगलों में सुरक्षा नहीं है। वेदों में ईश-साक्षात्कार हेतु अलग-अलग स्थानों पर उल्लेख है। उन्हें एकत्रित करके क्रम में लिखने पर साक्षात्कार की विधि स्पष्ट होती है। साधना आगे बढ़ने पर रीढ़ में कष्ट होना कुंडलिनी जागरण -ये सब स्थितियाँ होती हैं। इसी समय आत्म-साक्षात्कार होता है, हृदय से स्पष्ट आवाज आती है, मैं यहाँ हूँ। फिर कुंडलिनी जागरण ऊपर की ओर होता है, तब मस्तिष्क में घंटियों जैसी आवाज होती है। इसे वेदों में अनाहत नाद कहा गया है। जब कुंडलिनी जागरण सहस्राधार चक्र तक होता है तथा मस्तिष्क में पानी झरने जैसा अनुभव होता है। मस्तिष्क में ढक्कन खुलने, बंद होने जैसा अनुभव होता है। इस दौरान एकाएक नींद खुलना, रीढ़ की हड्डी में भयंकर कष्ट होना, ये सब बातें होती हैं। तब ध्यान करने पर शिवजी, ब्रह्माजी अथवा विष्णु भगवान स्पष्ट दिखाई देते हैं। आँखें बंद किये ही उनसे मानसिक बातचीत भी होती है। यही ईश-साक्षात्कार है। यदि इसमें कोई सन्देह करे या विश्वास नहीं करे, तो फिर आगे कुछ कहना व्यर्थ है, इसीलिये आवश्यक है कि हम पहले ईश-साक्षात्कार करें, फिर विचारों का आदान-प्रदान करें, यह अति उत्तम रहेगा। ध्यान की माला करके ध्यान लगाना, गायन करने के बाद ध्यान करना, योग प्राणायाम करते हुये ध्यान करना, दीपक को जलाकर आँख बंद करके ज्योति में ध्यान लगाना आदि, ऋ.-१-७६-२ व ऋ.-१-७७-६ व १-७८-१ में साक्षात्कार के बारे में है। ऋ. - मंडल -९ में कई मंत्रों में साक्षात्कार व मोक्ष प्राप्त आत्माओं के बारे में उल्लेख है। साथ ही ईश-साक्षात्कार हेतु आवश्यक बातें वेदों में उल्लिखित हैं, जैसे हृदय में सरलता होना, क्रोध न होना, अहं न होना। चारवाक जैसे लोगों को अहं भाव था, उन्हें ईश-साक्षात्कार का प्रश्न ही नहीं होता। उन्होंने अपनी ऊर्जा को केवल आडंबरों में लगाया, वे वेदों की गहराई में नहीं गये। जैसे कोई कहे कि सूर्य, पृथ्वी के चारों ओर घूमता है, हमें यही दिखाई देता है, और पुस्तक लिख दे, कुछ लोग उसको मानने भी लगें, लेकिन सत्य अलग है। जो प्राकृतिक नियम है, वह सत्य है। इस सत्य को अधूरे ज्ञान से नहीं जाना जा सकता है। पहले ज्ञान करें, ईश साक्षात्कार करें, तभी पूर्ण सत्य का ज्ञान होता है। इन अधूरे ज्ञानियों के शब्द-जाल पर बहस करना भी व्यर्थ है, बल्कि वेदों की गूढ़ बातें तथा उनका अनुपालन जिन्होंने किया है उन पर विचार विमर्श करना अधिक श्रेयस्कर है।

सेवा निवृत प्रवक्ता, हवेली दरवाजा, महोबा, (उ.प्र.)

आर्य समाज व आर्यवीर दल

-कर्मवीर

किसी भी परिवार, संस्था, समाज या राष्ट्र को उन्नत नाने में युवाओं का विशेष योगदान रहता है। इसका ारण यह होता है कि युवाओं के अन्दर उत्साह-सामर्थ्य-ाक्ति अधिक होती है, जिसका अभाव बहुत छोटे बच्चों व द्धों में प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। युवाओं के अन्दर कसी भी कार्य की दिशा व दशा बदलने की सामर्थ्य ोती है, यदि युवा सचरित्र, समर्थ तथा निष्ठावान् हों।

यही कारण है कि आज हमारे देश के माननीय धानमंत्री मोदी जी यह दावा करते हैं कि हम भारत को ुनिया के शिखर पर ले जा सकते हैं, क्योंकि पूरे संसार में न्य देशों की तुलना में भारत के पास सबसे अधिक ुवाशक्ति है। यदि इस युवाशक्ति को ठीक मार्ग-दर्शन देया जावे तो अवश्य ही भारत विश्व के श्रेष्ठतम देशों में ोगा।

जिसके पास युवा शक्ति कम होती है, उसका भविष्य अन्धकार में जाने की सम्भावना रहती है, क्योंकि युवा कार्यकर्त्ताओं के अभाव में विशेषत: सैन्य व तकनीकी के क्षेत्र में तो उनकी सुरक्षा पर प्रश्न-चिह्न लगने लगते हैं। रिवार-समाज-राष्ट्र के पास सम्पत्ति हो, पर सुरक्षा की ामर्थ्य न हो तो उनकी सम्पदा पर विरोधियों की नीयत ख़राब होने लगती है।

कुछ ऐसी ही स्थिति वर्तमान में आर्य समाज की है। आर्य समाज ने भी अपने को सशक्त-समर्थ-सुरक्षित रखने के लिए युवा इकाई के रूप में आर्यवीर दल संगठन को नाया। आर्यवीर दल की पहचान आर्य समाज के सैनिक संगठन के रूप में हुई।

आर्यवीर दल ने आर्य समाज के नेतृत्व में आर्य समाज की ही नहीं, अपितु आवश्यकता पड़ने पर अपनी सामर्थ्य/शक्ति के अनुसार सम्पूर्ण समाज, राष्ट्र एवं हिन्दू जाति की सेवा-सुरक्षा की। देश विभाजन के समय जो हिन्दू शरणार्थी पूर्वी पाकिस्तान (बंगलादेश) से आये, मुस्लिम अंसार गुण्डे उन पर आक्रमण करते, मारने व लूटने का यत्न करते। इस विपत्ति के समय आर्यवीर दल ने हिन्दू शरणार्थियों की सुरक्षा की उनकी सम्पत्ति को बचाया।

हिन्दुओं के गङ्गा-यमुना इत्यादि तीर्थ स्थलों पर मेले लगते। उनमें मुस्लिम युवक हिन्दू महिलाओं के साथ छेड़खानी करते, तो उनकी सुरक्षा के लिए आर्यवीरों को दायित्व दिया जाता था। हैदराबाद मुक्तिसंग्राम में आर्यवीरों का विशेष सहयोग - बलिदान रहा, क्योंकि आर्यवीरों को आर्य समाज के द्वारा धर्म-राष्ट्र की रक्षा के लिए सज्जित किया जाता था।

वर्तमान में भी आर्य समाज के बड़े सम्मेलनों में व्यवस्था व सुरक्षा की जिम्मेदारी आर्यवीर दल को ही दी जाती है।

जिन आर्य समाजों में आर्यवीर दल सक्रिय है, उन आर्य समाजों की गतिविधि व शोभा अलग ही दिखाई देती है। वहाँ के कार्यक्रमों की व्यवस्था-सुरक्षा व व्यायाम प्रदर्शन आदि का लोगों के मस्तिष्क पर विशेष प्रभाव पड़ता है। भारत के अनेक प्रान्तों में आर्य समाज के साथ-साथ आर्यवीर दल का कार्य रहा है, इन्हीं प्रान्तों में वीरभूमि राजस्थान भी अग्रणी है। राजस्थान की आर्य समाजों में आर्यवीर दल की विशेष भूमिका है। आर्यवीर दल गंगापुर सिटी ने भी आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में बड़ी भूमिका निभाई है। यहाँ का आर्यवीर दल संगठन बड़ा जागरूक है। वर्तमान में भी इस नगर में आर्यवीर दल की दो शाखाएँ सतत कार्य कर रही हैं, यहाँ के शिक्षक व आर्यवीर बड़े योग्य व उत्साही हैं। शाखाओं में आने वाले आर्यवीरों को शारीरिक रूप से सुदृढ़ किया जाता है, वहीं पर उनको योग्य आर्य भद्र पुरुषों द्वारा जीवन की उन्नति के लिए प्रेरित किया जाता है। जिसका परिणाम यह रहा कि शाखाओं में आने वाले दो-तीन आर्यवीरों ने राजस्थान की बोर्ड परीक्षाओं में भी उच्च स्थान प्राप्त किया।

आर्य वीर दल गंगापुर सिटी के मुख्य प्रेरणा स्रोत माननीय मदनमोहन जी व उनके समस्त सहयोगी हैं। मदन मोहन जी ने अपना पूरा जीवन आर्य समाज व आर्यवीर

त की सेवा में लगाया है। आप एक निर्भीक व दृढ़ ास्थावान आर्य पुरुष है। आपकी छत्रछाया में आर्यवीर ल गंगापुर शहर कार्य करता है। प्रत्येक वर्ष दशहरा पर्व : आर्यवीर दल द्वारा भव्य कार्यक्रम किया जाता है । ासमें आर्यवीरों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन होता है। शहर के नेक स्त्री-पुरुष इस कार्यक्रम को देखने आते हैं। कार्यक्रम एक विशेष कार्य यह किया जाता है कि दर्शक तथा ार्यकर्त्ता संगठन के लिए वीरनिधि एकत्र करते हैं। अपनी वेच्छा से लोग इसमें सहयोग करते हैं। यह इस नगर की र्षों पुरानी परम्परा है। इस दशहरे पर कार्यक्रम में सम्मिलित ने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ।

आर्य वीर दल गंगापुर सिटी के १५ वर्ष के घोर संघर्ष : उपरान्त उच्च न्यायालय राजस्थान के आदेशानुसार नगर : बीच में पड़ने वाली २६ दुकानें पिछले वर्ष बन्द करा दी ई। इसका सारा श्रेय आर्यवीर दल व उसके नेता दनमोहन जी को जाता है। आपने धैर्य नहीं छोड़ा और १५ र्ष तक केस लड़ते रहे, अन्ततः सफलता प्राप्त हुई। ये म सब आर्य जनों के गौरव पूर्ण कार्य है। शहर में मुस्लिमों ी संख्या भी पर्याप्त है। यहाँ कई घटनाएँ ऐसी हुई, जो न्दू युवतियाँ मुस्लिम युवकों के साथ चली गई, परन्तु नका वैदिक रीति से विवाह संस्कार आर्य समाज ने राया। इसी कारण से नगर के सभी पौराणिक लोग भी दनमोहन जी का बहुत सम्मान करते हैं तथा आर्य समाज आर्य वीर दल को मुक्त हस्त से दान देते हैं। आपकी ायु लगभग ७० वर्ष है, परन्तु आपका उत्साह अभी भी त्रकों जैसा है, इसीलिए आप सैंकड़ों योग्य आर्य वीरों के ़णा स्रोत रहे। इसी गंगापुर शहर ने दिवंगत सीताराम जी से कर्मठ आर्यवीर को तैयार किया।

इतना कुछ लिखने का उद्देश्य/प्रयोजन यह है कि ार्य समाज व आर्यवीर दल का माता-पिता व संतान पा संबंध है। संतान योग्य व समर्थ तथा संस्कारवान ती है तो माता-पिता की उन्नति-प्रगति, यश-प्रशंसा व क्षा होती है। दुर्भाग्य से कुछ आर्य समाज के कथित ाधिकारी गण आर्य समाज को अलग व आर्यवीर दल अलग मानने लगे तथा आर्य वीर दल का विरोध करने े। आर्यवीरों के आर्य समाज में प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगाने लगे। इसका कारण रहा सम्पत्ति। जो अधिकारी आर्यसमाज के धन सम्पत्ति का मनमाने ढंग से उपभोग करते, आर्यवीर दल द्वारा विरोध किये जाने के भय से ऐसे आर्यवीर दल का बहिष्कार किया विरोध किया, ताकि वे निरंकुश होकर स्वार्थ सिद्धि कर सके।

कुछ दोष आर्यवीर दल का भी हो सकता है, परन्तु यदि सन्तान पथ से विचलित हो जाए तो उसको सही मार्ग दिखाने का दायित्व माता-पिता का होता। ऐसा ही दायित्व आर्य समाज का आर्यवीर दल के प्रति है।

जिस घर में संतान नहीं होती, उस गृहस्थ की सम्पत्ति पड़ोसियों की नजर टेढ़ी होने लगती है तथा जिसकी संतान योग्य हो बलवान हो, ऐसे गृहस्थ सुख चैन से जीवन व्यतीत करते हैं।

आर्य समाजों में युवकों को जोड़ने अपनी संख्या को बढ़ाने और न्यून खर्च में अच्छी सफलता प्राप्त करने का आर्यवीर दल एक उत्तम प्रक्रम है। हम सब आर्यभद्र पुरुषों का कर्त्तव्य है कि आर्य समाज की प्रत्येक संस्था में आर्य वीर दल की शाखाएँ चले, सब आर्य परिवारों के बच्चे शाखाओं में अनिवार्य रूप से भाग लें तथा आर्य जन उनको उत्तम चरित्र की शिक्षा दें, तो आर्य परिवारों के बच्चों को यह नहीं कहना पड़ेगा कि मेरे दादा-नाना आर्य समाजी थे।

अजमेर के अन्दर सरकारी परीक्षाएँ होती रहती है। ऋषि भूमि परोपकारिणी सभा में अनेक युवक परीक्षा के निमित्त आकर ठहरते हैं। कोई भी युवक एक बार यह कह दे कि मैं आर्य समाज से आया हूँ, आर्य समाज से पत्र लाये न लाये, परन्तु सभी के अधिकारियों की उदारता है कि सभा द्वारा सबके भोजन-आवास की समुचित व्यवस्था की जाती है। आये हुए युवकों से कई बार पूछ लेते हैं कि क्या आप आर्य समाजी हैं तो उत्तर मिलता है- मेरे दादा या नाना आर्य समाजी थे। मैं तो आर्य समाज में नहीं जाता हूँ। इसके कारण होते दादा-नाना यदि वे अपने पोते-नाती को आर्य समाज में लेकर जायेंगे, आर्यवीर दल द्वारा उन्हें खेल-खेल में आर्य सिद्धान्तों का ज्ञान होगा तो आर्य परिवारों के बच्चों को यह नहीं कहना पड़ेगा कि मेरे दादा-नाना आर्य समाजी थे, मैं नहीं। **-ऋषि उद्यान, अजमेर।**

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

पेछले अंक का शेष भाग.......

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
१८५. श्वसन क्रियाएं एवं प्राणायाम (सी.डी.)	४०.००
१८६. मोटापा (सी.डी.)	४०.००
१८७. योगनिद्रा (सी.डी.)	३०.००
१८८. ध्यान (सी.डी.)	३०.००
१९९. योगनिद्रा (कैसेट)	३०.००
१९०. ध्यान (कैसेट)	३०.००

श्री रावसाहब रामविलास शारदा

१९१. आर्य धर्मेन्द्र जीवन (सजिल्द) (स्वामी दयानन्द जी का जीवन चरित्र)	१००.००

डॉ. रामप्रकाश आर्य

१९२. महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन एवं उनकी हिन्दी रचनाएं)	२५०.००

महर्षि गार्ग्य

१९३. सामपद संहिता सजिल्द (पदपाठः)	२५.००

डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा

१९४. वेदार्थ विमर्शः (वेदार्थ पारिजात खण्डनम्)	२५.००
१९५. डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (बढ़िया)	५१.००
१९६. डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (साधारण)	३१.००

महामहोपाध्याय पं. आर्यमुनि

१९७. वाल्मीकि रामायण-(सजिल्द) आर्य टीका सहित (प्रथम भाग)	१६०.००
१९८. वाल्मीकि रामायण-(सजिल्द) आर्य टीका सहित (द्वितीय भाग)	१६०.००

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
१९९. महाभारत आर्य टीका (प्रथम भाग)	
२००. महाभारत आर्य टीका (द्वितीय भाग)	

Prof. Tulsi Ram

201.	The Book Of Prayer (Aryabhivinaya)	35.0
202.	Kashi Debate on Idol Worship	20.0
203.	A Critique of Swami Narayan Sect	20.0
204.	An Examination of Vallabha Sect	20.0
205.	Five Great Rituals of the Day (Panch Maha Yajna Vidhi)	20.0
206.	Bhramochhedan (New Edition)	25.0
207.	Bhranti Nivarana	35.0
208.	**Atmakatha**- Swami Dayanand Saraswati	20.0
209.	Bhramochhedan	5.0
210.	Chandapur Fair	5.0

DR. KHAZAN SINGH

211.	Gokaruna Nidhi	12.0

DEENBANDHU HARVILAS SARDA

212.	Life of Dayanand Saraswati	200.0

SWAMI SATYA PRAKASH SARASWATI

213.	Dayanand and His Mission	5.0
214.	Dayanand and interpretation of Vedas	5.0
२१५.	पवित्र धरोहर (सी.डी.)	५१.०

आचार्य उदयवीर शास्त्री

२१६. जीवन के मोड़ (सजिल्द)	२५०.०

अन्य लेखकों के ग्रन्थ-निम्न पुस्तकों पर कमीशन देय नहीं है।

क	नाम पुस्तक	मूल्य

श्री गजानन्द आर्य

.	वेद सौरभ	१००.००
.	Gokarunanidhi (Eng.)	२५.००

ॉ. सुरेन्द्र कुमार (भाष्यकार एवं समीक्षक)

.	मनुस्मृति	३००.००
.	महर्षि दयानन्द वर्णित शिक्षा पद्धति	१५०.००

सत्यानन्द वेदवागीशः

.	दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (उत्तरखण्ड)	३००.००
.	दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (पूर्वखण्ड)	३५०.००

डॉ. वेदपाल सुनीथ

.	माध्यन्दिन शतपथीय यूप ब्राह्मणों का भाष्य (अजिल्द)	५०.००
.	शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य(अजिल्द)	७०.००
.	शतपथीययूप ब्राह्मण का भाष्य एवं शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य (सजिल्द)	१५०.००
.	यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (विशिष्ट संस्करण)	५०.००
.	यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (साधारण संस्करण)	२५.००

आचार्य सत्यव्रत शास्त्री

.	उणादिकोष	८०.००
.	दयानन्द लहरी	५०.००

प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार

.	वेदाध्ययन (भाग–१)	६.००
	वेदाध्ययन (भाग–२)	७.००
	वेदाध्ययन (भाग–१०)	६.००
	प्रार्थना सुमन	४.००
	ईश्वर! मुझे सुखी कर	
	कौन तुझको भजते हैं?	८.००
	पावमानी वरदा वेदमाता	९.००
	प्रभात वन्दन	६.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
२३८.	भक्ति भरे भजन	११०.००
२३९.	विनय सुमन (भाग–३)	६.००
२४०.	वेद सुधा	८.००
२४१.	वेद पढ़ो और पढ़ाओ	१००.००
२४२.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–२)	६.००
२४३.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–३)	५.००
२४४.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–४)	९.००
२४५.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–५)	६.००
२४६.	Quest for the Infinite	20.00
२४७.	वैदिक आदर्श परिवार (बड़ा आकार)	१५०.००

श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु

२४८.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–१)	
२४९.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–२)	१६०.००
२५०.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–३)	१७०.००
२५१.	अमर कथा पं. लेखराम	६०.००
२५२.	कवि मनीषी पं. चमूपति	१६०.००
२५३.	कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में	२००.००
२५४.	निष्कलंक दयानन्द	१६०.००
२५५.	मेहता जैमिनी	१५०.००
२५६.	कुरान वेद की छांव में	१५०.००
२५७.	जम्मू शास्त्रार्थ	३०.००
२५८.	महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव	२०.००
२५९.	श्री रामचन्द्र के उपदेश	२५.००
२६०.	धरती हो गई लहुलुहान	३०.००

विविध ग्रन्थ

२६१.	नित्यकर्म विधि तथा भजन कीर्तन	२०.००
२६२.	उपनिषद् दीपिका	७०.००
२६३.	आर्य समाज के दस नियम	१०.००
२६४.	मद्यनिषेध शिक्षित शतकम्	१५.००
२६५.	आर्यसमाज क्या है ?	८.००
२६६.	जीवन का उद्देश्य	२०.००

२६७.	वेदोपदेश	३०.००
२६८.	सत्यार्थ प्रकाश का समीक्षात्मक अध्ययन	२०.००
२६९.	भगवान् राम और राम-भक्त	२५.००
२७०.	जीवन निर्माण	२५.००
२७१.	१०० वर्ष जीने के साधन नित्यकर्म	२५.००
२७२.	दयानन्द शतक	८.००
२७३.	जागृति पुष्प	८.००
२७४.	त्यागवाद	२५.००
२७५.	भस्मान्तं शरीरम्	८.००
२७६.	जीवन मृत्यु का चिन्तन	२०.००
२७७.	ब्रह्मचर्य का वैज्ञानिक स्वरूप	१०.००
२७८.	कर्म करो महान बनो	१४.००
२७९.	अष्टाध्यायी सूत्रपाठ	५०.००
२८०.	आनन्द बहार शायरी	१५.००
२८१.	वैदिक वीर गर्जना	२५.००
२८२.	पर्यावरण विज्ञानम्	२०.००

DR. HARISH CHANDRA

283	The Human Nature & Human Food	12.00
284.	Vedas & Us	15.00
285.	What in the Law of Karma	150.00
286.	As Simple as it Get	80.00
287.	The Thought for Food	150.00
288.	Marriage Family & Love	15.00
289.	Enriching the Life	150.00

डॉ. वेदप्रकाश गुप्त

२९०.	दयानन्द दर्शन	६०.००
२९१.	Philoshophy of Dayanand	150.00
२९२.	महर्षि दयानन्द का समाज दर्शन	२०.००

२९३.	आर्य सिद्धान्त और सिख गुरु	६०.००
२९४.	आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण (आचार्य सत्यजित् जी)	४०.००
२९५.	सत्यासत्य निर्णय	२५.००
२९६.	कलैण्डर-गायत्री मन्त्र, सन्ध्या सुरभि, महर्षि दयानन्द की शिक्षाएँ-प्रत्येक	२५.००
२९७.	ओ३म् का स्टीकर	१०.००

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर **'मन्त्री परोपकारिणी सभा'** अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

दूसरों को कुछ देने का नाम यज्ञ है

- कन्हैयालाल आर्य

अपने धन और पदार्थों में से दूसरों को कुछ बाँटना ीखो, देना सीखो, यही यज्ञ का संदेश है। क्या आपने ‌भी इस बात पर ध्यान दिया है कि हमारा हाथ है न, कतना भारी अभ्यास है इसका, मुड़कर के सदैव मुख की ोर ही आता है। तात्पर्य यह है कि किसी कक्ष में आप ठे हुए हैं और अचानक विद्युत् चली जाये तो जो आप ा रहे हैं, क्या आपका हाथ नाक या आँख की ओर ायेगा? बिलकुल नहीं। कितना भी अन्धेरा क्यों न हो, ापका हाथ सीधा मुख की ओर जाता है, कुछ ऊपर-नीचे हीं गिरता। इतना भारी अभ्यास है कि हाथ मुख की ओर ी जाता है, परन्तु इस हाथ को सीधा रखना सीखो, पहले ूसरों को खिलाओ, फिर अपनी ओर लेकर के आओ, तो सका स्वाद बढ़ जायेगा और वह भोजन पुण्य बनकर ापका, आपके परिवार का और आपके राष्ट्र का कल्याण रेगा। इसे एक दृष्टान्त से समझते हैं-

एक बार प्रजापति के पास असुर गये और जाकर शिकायत करने लगे- महाराज, आप सदैव देवताओं को पदेश देते हो, हमें कोई भी उपदेश नहीं देते। आप क्षपात करते हैं। इस शिकायत को सुनकर प्रजापति ने हा - ठीक है। इस मास की पूर्णिमा के दिन आपको हम पदेश देंगे और भोजन भी करायेंगे। यह सुनकर असुर ड़े प्रसन्न हुए, परन्तु प्रजापति ने कहा-हम उस दिन देवताओं ो भी बुलायेंगे, उन्हें भी उपदेश करेंगे और आपके साथ- ाथ उनको भी भोजन करायेंगे। असुरों ने उत्तर दिया - में कोई आपत्ति नहीं है। यह कह कर असुर चले गये।

निश्चित तिथि एवं समय की सूचना प्रजापति ने देवताओं ो भी दे दी। पूर्णिमा का दिन आया। असुर और देवता जापति के पास पहुँच गये। असुरों को लगा कि प्रजापति क्षपात करते हुए पहले देवताओं को भोजन करायेंगे। चा-खुचा हमें खिलाया जायेगा। असुरों के गुरु ने प्रजापति कहा- महाराज! आपने हमें पहले निमन्त्रण दिया था या वताओं को? प्रजापति ने कहा-आपको। असुरों ने कहा फिर भोजन आप पहले हमें कराओगे या देवताओं को? जापति ने कहा- आपको पहले भोजन कराया जायेगा। यह कहकर प्रजापति ने असुरों को भोजन के लिए पंक्तियों में आमने-सामने बैठने का आदेश कर दिया। असुर लोग बैठ गये। भोजन परोस दिया गया।

ज्यों ही असुरों ने भोजन की ओर हाथ बढ़ाया, प्रजापति ने कहा- रुकिये! भोजन करने से पूर्व मेरी एक शर्त है। तुम्हारी कोहनियों पर लकड़ी की एक-एक खपच्ची बाँधी जायेगी, तभी आप भोजन कर सकेंगे। ऐसा कहकर प्रजापति ने सभी असुरों की कोहनियों पर वैसा करा दिया और तब भोजन करने का आदेश दे दिया। असुरों ने भोजन का ग्रास उठाया, परन्तु कोहनी पर लकड़ी बँधे रहने के कारण भोजन मुख तक जाने के स्थान पर इधर-उधर अपने मुख, आँख, दाँत, सिर पर गिरने लगा। निश्चित समय हो जाने पर प्रजापति ने असुरों को कहा - अब भोजन खाना बन्द कर दीजिए। भोजन का जितना समय निश्चित था, समाप्त हो गया। बेचारे असुर रुँआसे होकर भूखे ही वहाँ से उठ गये।

अब देवताओं के भोजन करने की बारी थी। देवताओं को भी पंक्तियों में आमने-सामने बिठा दिया गया। भोजन परोस दिया। इसी बीच असुरों के गुरु ने कहा - महाराज, यह तो न्याय नहीं है। आप देवताओं की कोहनियों में लकड़ी की खपच्चियाँ क्यों नहीं बँधवा रहे हैं? प्रजापति ने कहा- देवताओं को भी खपच्चियाँ बाँधी जायेंगी। यह कहकर प्रजापति ने देवताओं की कोहनियों पर भी लकड़ी की खपच्चियाँ बँधवा दीं। देवताओं ने भोजन का ग्रास उठाया, सामने वाले के मुख में दे दिया और सामने वाले ने भी उठाया तथा अपने सामने वाले के मुख में भोजन दे दिया। निश्चित समय से पूर्व ही सभी देवताओं ने तृप्त होकर भोजन कर लिया। यह सब दृश्य असुरों ने देखा तो बहुत लज्जित हुए। असुरों के गुरु ने कहा-महाराज! अब भूखे तो रह गये, कम से कम उपदेश तो कर दो। प्रजापति ने कहा - उपदेश तो मैं कर चुका हूँ। तुम्हारी समझ में नहीं आया तो मैं क्या कर सकता हूँ? असुर प्रजापति का आशय न समझते हुए पुनः बोले - महाराज, आप ने तो केवल भोजन करने का आदेश दिया है। उपदेश तो बिल्कुल नहीं किया है।

प्रजापति बोले-देखो! भोजन तुम्हें भी परोसा गया, वताओं को भी परोसा गया। तुम लोग इसलिए भूखे रह ये कि तुमने स्वार्थवश स्वयं खाने का प्रयास किया, दूसरों ो नहीं खिलाया। तुम अकेले खाने का प्रयास करते रहे ौर सभी भूखे रह गये। देवताओं ने दूसरों को खिलाने में चि ली, इसलिए वे तृप्त हो गये। आज का उपदेश यह है क दूसरों को खिलाना सीखें, तभी आपकी तृप्ति होगी। सीलिए वेद ने उपदेश दिया है- 'जो लोग केवल अपने लए पकाकर खा रहे होते हैं, वे लोग पाप खा रहे होते हैं, अकेले खाने वाला पाप खाता है।'

योगेश्वर कृष्ण ने तो गीता के तीसरे अध्याय के श्लोक संख्या १२ में अकेले खाने वाले को चोर तक कह डाला है-

इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः।
तैर्दत्तानप्रदायेभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः।।

यज्ञ से प्रसन्न होकर वायु, जल आदि देवता तुम्हें वे सब सुख प्रदान करेंगे, जिन्हें तुम चाहते हो। जो व्यक्ति उनके द्वारा दिए गए इन उपहारों का उपयोग देवताओं को बिना दिए करता है, वह तो चोर है। यहाँ **'स्तेन'** शब्द का उपयोग योगेश्वर कृष्ण जी ने चोर के लिए किया है। जो अपने लिए भोजन पका रहा है, बाँटना नहीं चाहता, वह चोर है। भगवान् कृष्ण ने चोर शब्द का प्रयोग किया है, यह हमारी आत्मा को झिंझोड़ने वाला, हिलाने वाला शब्द है।

ऋग्वेद के १०वें मण्डल के ११७ वें सूक्त के मन्त्र संख्या ६ में अकेला खाने वाला किस प्रकार पापी है, उसका वर्णन इस प्रकार मिलता है-

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी।।

(अप्रचेताः) धनों की अस्थिरता का विचार न करने वाला (अन्नं मोघं विन्दते) अन्न को व्यर्थ ही प्राप्त करता है। प्रभु कहते हैं (सत्यं ब्रवीमि)मैं यह सत्य ही कहता हूँ (सः) वह अन्न व धन (तस्य) उसका (इत्) निश्चय से (वधः) वध का कारण होता है। यह अदत्त अन्न व धन उसकी विलास वृद्धि का हेतु होकर उसका विनाश कर देता है। यह (अप्रचेताः) नासमझ व्यक्ति (न) न तो (अर्यमणम्) राष्ट्र के शत्रुओं का नियमन करने वाले राजा को (पुष्यति) पुष्ट करता है (नो) और न ही (सखायम्) मित्र को। वह कृपण व्यक्ति राष्ट्र रक्षा के लिए राजा को भी धन नहीं देता और न ही इस धन से मित्रों की सहायता करता है। वह दान न देकर (केवलादी) अकेला खाने वाला व्यक्ति (केवलाघः भवति) शुद्ध पाप ही पाप खाने वाला हो जाता है, दूसरों को न बाँटने वाला व्यक्ति 'चोर' ही कहलायेगा। जो केवल अपने लिए भोजन पकाते हैं, वे पाप की हंडिया पकाते हैं। यज्ञपूर्वक बाँटकर खाना पुण्य प्राप्ति का मार्ग है।

ब्राह्मण लोक कल्याण के लिए अपना समय ज्ञानोपार्जन तथा ज्ञान दान में लगाता है तथा अपने भोजन में से थोड़ा-सा भाग बलिवैश्वदेव यज्ञ के लिए निकालता है। यह बलिवैश्वदेव इस बात का प्रतीक है कि ब्राह्मण सदैव इस बात को स्मरण रखें कि यह जो मैं निश्चिन्त होकर ज्ञानोपार्जन कर रहा हूँ, इस निश्चिन्तता के लिए मैं राजा, प्रजा, यहाँ तक कि प्राणीमात्र का ऋणी हूँ। मुझे लोक कल्याण के लिए जीना है और जीने के लिए खाना है। इसी प्रकार क्षत्रिय अन्याय निवारण के व्रत के लिए जीता है और जीने के लिए खाता है। वैश्य प्रजा का दारिद्र्य निवारण करने के लिए जीता है और जीने के लिए खाता है। शूद्र किसी न किसी व्रतधारी की सेवा के लिए जीता है और जीने के लिए खाता है। सो लोकसेवा के लिए जीना और जीने के लिए खाना यज्ञशेष खाना है। इसी बात को और अधिक स्पष्ट करने के लिए गीता के तीसरे अध्याय ३ श्लोक १३ में इस प्रकार वर्णन है-

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।।

वे व्यक्ति ही सन्त हैं जो यज्ञ के बाद बची हुई, वस्तु (यज्ञशेष)का उपभोग करते हैं, वे सब पापों से मुक्त हो जाते हैं, किन्तु जो दुष्ट लोग केवल अपने लिए भोजन पकाते हैं, वे तो समझो पाप ही खाते हैं।

यह जो बात ऋग्वेद में कही है, गीता में भी कही है वह इस बात को समझा रही है कि वस्तुओं को अधिक-से- अधिक संग्रह करके अपने पास रख लेना अच्छी बात नहीं है। बाँटने का नाम यज्ञ है, सेवा का नाम यज्ञ है, परोपकार का नाम यज्ञ है, हम इसे करना सीखें।

आपके घर में जो भी पदार्थ आये उसका प्रयोग करने से पहले भगवान् को भोग लगाओ, अर्थात् अग्नि में आहुति

. फिर जिसे बलिवैश्वदेव यज्ञ कहते हैं, उसका अनुष्ठान रके प्राणी मात्र के लिए भाग निकालिये। जिसे हम भाग बने के मन्त्र द्वारा बताते हैं कि गौ ग्रास निकालिए, आस-स कोई व्यक्ति भूखा, पीड़ित, दु:खी याचक है, उसके गए भाग निकालिए। पितृयज्ञ और अतिथियज्ञ द्वारा माता-ता, गुरु, अतिथि, राष्ट्र सबके लिए भाग निकालिए।

कहते हैं, जो पाप खा रहे होते हैं फिर वह रोग बनकर, ही कलह बनकर, वही विवाद बनकर, वही तनाव बनकर, ही सन्ताप बनकर व्यक्ति के परिवार में उसके जीवन में भरता है, अत: बाँटना सीखो, देना सीखो।

हमारा कर्म यज्ञ बन जाये, हम याज्ञिक बन जायें। से! जब कोई व्यक्ति यज्ञ करता है तो उसकी सुगन्ध को मेटकर कभी कैद करके रख नहीं सकता। तभी तो कहा ाता है- ''इदन्न मम''- यह आहुति अग्नि, सोम, प्रजापति ौर इन्द्र के लिए है, मेरे लिए नहीं। परोपकार के लिए कया गया जो भी कर्म है, वह सब यज्ञ है। सेवा यज्ञ है, नकल्याण के लिए निस्वार्थ भाव से किया गया है कार्य ज्ञ है। तभी तो वेद में कहा है - 'तुम देवताओं को प्रसन्न रो, देवता तुम्हें प्रसन्न करेंगे। तुम देवताओं के लिए यज्ञ रो, देवता तुम्हारे लिए यज्ञ करेंगे, तुम्हारा कल्याण करेंगे। ख को जितना अधिक बाटेंगे उतना ही अधिक आनन्द ायेगा। इस तरह से यज्ञ शेष को ग्रहण करना सीखो - स करो और बाँटो। बाँटने का परिणाम यह होगा उस स्तु का स्वाद बढ़ जायेगा।'

कहते हैं कि प्रसन्नता को बाँटो, इसलिए कि प्रसन्नता ढ़ जाये और दु:ख को बँटाओ, इसीलिए कि दु:ख हल्का ड़ जाये। जब भी किसी के जीवन में प्रसन्नता आती है तो ग निमन्त्रण देने पहुँच जाते हैं, सब मित्रों सम्बन्धियों को हते हैं- आइये, हमारी प्रसन्नता में सम्मिलित होइये, योंकि हमारी प्रसन्नता में वृद्धि हो जायेगी। दु:ख आता है लोग बिना निमन्त्रण के सूचना मात्र से दु:ख को बाँटने जाते हैं, सब लोग साथ खड़े हो जाते हैं, यह कहने के ए कि तुम्हारे साथ संवदेना और सहानुभूति लेकर हम ये हैं, अपने को अकेला मत समझना और यह नहीं चना कि तुम अकेले हो। दु:ख आया है, दुनिया में येक व्यक्ति पर दु:ख आता है, दु:ख के बिना कोई अछूता नहीं रहता। प्रत्येक व्यक्ति को दु:ख का सामना स्वयं करना पड़ता है, परन्तु दु:ख बाँटने वाले उसका मनोबल बढ़ाते हैं और दु:ख बँट जाता है, घट जाता है।

आपने एक बात देखी होगी- आपके कमरे में दो खिड़कियाँ हैं, आप निमन्त्रण देते हैं शुद्ध वायु को, पवनदेव को और कहते हैं-पवन देव! घुटन है अन्दर, आप आओ, हमें शुद्ध वायु प्रदान करो। आपने निमन्त्रण दिया, परन्तु वे आने के लिए तैयार नहीं हैं। पवन देव बोले-एक मार्ग से बुलाया और मुझे बन्दी बनाकर रखना चाहता है, दूसरी खिड़की खोल, तभी मैं अन्दर आऊँगा। मैं एक ओर से आऊँगा, तुम्हें ताजगी देने के पश्चात् दूसरी खिड़की से बाहर चला जाऊँगा।

इधर से वायु आए, उधर से जाए। तात्पर्य यह है कि जब तुम्हारे जीवन में आनन्द आए तो बाँटना प्रारम्भ कर दो। बाँटना प्रारम्भ कर दोगे तो क्या होगा? वह कई गुणा तुम्हारे पास आएगा और तुम्हें आनन्दित करना प्रारम्भ कर देगा।

कुएँ से पानी निकालो तो वह दूसरों का कल्याण करेगा, दूसरा पानी यहाँ आयेगा, ताजा बना रहेगा, जीवन जीवन्त रहेगा। जो जल भरकर जाये बादल, इधर से भरकर लाये और उधर से बरसाये, तभी उन बादलों की शोभा है। और यदि गरजते हुए चले जायें तो उनकी कोई शोभा नहीं। उनका होना न होना व्यर्थ है। वहाँ बादल भी बाँटना सीख रहा है। इसी का नाम जीवन है। यह जीवन की सत्यता है, यह जीवन का एक उद्देश्य है। योगीराज कृष्ण कहते हैं- 'इसी का नाम यज्ञ है।' इसीलिए यह एक चक्र है जो घूम रहा है। यदि पाना चाहते हैं तो देना सीखो और दोगे तो लौट पर भी पर्याप्त मात्रा में आयेगा।

वेद के ऋषि स्पष्ट रूप से निर्देश करते हैं कि यदि खाना चाहते हो तो ध्यान रखना-यज्ञ करने के बाद घर में भोजन को खायें। उस पर तुम्हारा अधिकार है, बाँटकर खाओ, इसमें आपको आनन्द आयेगा। इसी में हम सभी का हित है। प्रभु हम सब पर कृपा करें कि स्वार्थी न बनें, परोपकार भी सकाम भावना से न करें, दूसरों को बाँटना सीखें, तभी हमारा यज्ञ सफल होगा।

- ४/४४, शिवाजी नगर, गुड़गाँव, हरियाणा।

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम- **आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के **वेद-प्रवचन**, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है ज सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोग बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंत जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमि रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार क लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचि सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जात है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादि दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनार वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधन की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं क ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वि दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर प वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप म एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसक उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(०१ से १५ नवम्बर २०१५ तक)

१. श्री ब्रह्मपाल सिंह, सहारनपुर, उ.प्र. २. श्री सुभाष नवाल, अजमेर ३. श्री शैलेश नवाल, अजमेर ४. श्री सुशील नवाल, अजमेर ५. श्रीमती श्रुति नवाल, अजमेर ६. सुश्री यशस्वी नवाल, अजमेर ७. सुश्री शरीस्या नवाल, अजमेर ८. श्रीमती आशा महेश्वरी, पुणे, महाराष्ट्र ९. हर्शल सोनी, जोधपुर, राज. १०. श्री देवमुनि, अजमेर ११. श्री किशोर काबरा, अजमेर १२. श्री वरद्धिचन्द गुप्त, जयपुर, राज. १३. श्री एम.एल. गोयल, अजमेर १४. श्री ज्योति प्रकाश, जबलपुर १५. श्री चेतनप्रकाश आर्य, हिसार, हरियाणा १६. श्री सुभाषचन्द, हिसार,हरियाणा १७. श्री मदनलाल खन्ना, गाजियाबाद, उ.प्र. १८. श्रीमती प्रमिला पोपले, दिल्ली १९. श्री वीरा चोपड़ा, कानपुर, उ.प्र. २०. श्री मोहनलाल, नागौर, राज. २१. श्रीमती शकुन्तला, बीकानेर, राज. २२. श्री कमलेश, कैथल, हरियाणा २३. श्रीमती दर्शनादेवी, कैथल, हरियाणा २४. श्री आनन्दमुनि, हिसार, हरियाणा २५. श्री ओम कुमार आर्य/श्री सुभाषचन्द यादव/श्रीमती मीना डागर, नई दिल्ली २६. मा. कपूर सिंह आर्य, जीन्द, हरियाणा २७. श्री जयपाल गर्ग, दिल्ली २८. श्री देवेन्द्र सिंह यादव, नई दिल्ली २९. श्री रामशरण, बंदायू, उ.प्र. ३०. श्री बलवानसिंह , बुलन्दशहर, उ.प्र. ३१. श्री राम किशोर गुप्ता, छत्तीसगढ़ ३२. सुश्री सुनन्दामुनि, जोधपुर, राज. ३३. श्री संदीप आर्य, झज्जर, हरियाणा ३४. आर्यन पब्लिक स्कूल, बीकानेर, राज. ३५. श्री बलजीत सिंह,हिसार, हरियाणा ३६. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर ३७. स्वास्तिकामा चेरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती, महाराष्ट्र ३८.श्री रामस्वरूप आर्य, अलवर, राज. ३९. श्री वासुदेव आर्य, अजमेर ४०. श्री ओम मारोली, रोहतक, हरियाणा ४१. श्री सतीशचन्द्र, जालन्धर, पंजाब।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(०१ से १५ नवम्बर २०१५ तक)

१. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर २. श्री यशपाल गुप्ता, दिल्ली ३. श्री विरदीचन्द गुप्त, जयपुर, राज. ४. श्री शान्तिस्वरूप टिक्कीवाल, जयपुर, राज. ५. श्री रामपत आर्य, महेन्द्रगढ़, हरियाणा ६. श्रीमती पुष्पादेवी, कबीरनगर, उ.प्र ७. मा. जयकुमार आर्य, सहारनपुर, उ.प्र. ८. श्री जब्बर सिंह आर्य, सहारनपुर, उ.प्र. ९. श्रीमती उषा देवी/श्री रमेश मुनि अजमेर १०. श्री महावीर सिंह, ग्वालियर, म.प्र. ११. श्री राजेन्द्रप्रसाद शर्मा, रोहतक, हरियाणा १२. श्री धमेन्द्र सिंह पीलीभीत १३. श्री रामस्वरूप, अम्बाला, हरियाणा १४. श्री विजय पासरिचा, दिल्ली १५. श्री मूलचन्द गुप्ता, दिल्ली, १६. श्री रघुवीर सिंह आर्य, सहारनपुर, उ.प्र. १७. श्री ईश्वर सिंह, खहवा गंजीपुर १८. श्री रामलाल पहुचा, हिसार, हरियाणा १९ श्री देशपालसिंह, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. २०. श्रीमती शान्ति देवी/श्रीमती बन्वारी देवी, भीलवाड़ा, राज. २१. श्री सतीश कुमार आर्य, दिल्ली २२. श्री बलवीर सिंह बत्रा, अजमेर २३. श्रीमती उर्मिला अवस्थी, जोधपुर, राज. २४. श्री रामनिवार अग्रवाल, छत्तीसगढ़ २५. मेहता माताजी, अजमेर २६. श्रीमती हेमा उपाध्याय, अजमेर २७. सुश्री सुनन्दामुनि, जोधपुर राज. २८. श्री छोटू जी हलवाई रामगढ़वाले २९. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर ३०. डॉ. सुनीता रानी, हिसार, हरियाणा ३१ श्रीमती गीता चौहान, अजमेर ३२. राघवेन्द्रा राव, विजयवाड़ा, आन्ध्रप्रदेश ३३. कैप्टेन चन्द्रप्रकाश त्यागी/श्रीमती कमल त्यागी ३४. श्री ओमप्रकाश पारीक, अहमदाबाद, गुजरात ३५. श्री कैलाश शर्मा, अजमेर ३६. श्रीमती कान्ता अग्रवाल अजमेर ३७. श्री कृष्णसिंह झज्जर, हरियाणा ३८. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, अजमेर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर

जिज्ञासा समाधान – १००

– आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा- कुछ जिज्ञासायें मन में हैं। कृपया समाधान रने का कष्ट करें:-

१-यम, २-नियम, ३-आसन, ४-प्राणायाम, ५-त्याहार, ६-धारणा, ७-ध्यान एवं ८-समाधि। यह क्रम हर्षि पतञ्जलि ने योग दर्शन में दिया है।

क्या यम-नियम का पालन करने वाला व्यक्ति भी ीधे ध्यान (७) अवस्था में पहुँचकर ध्यान का अभ्यास र सकता है? यदि कर सकता है तो फिर यम- नियम ादि की क्या आवश्यकता है?

आखिर यह ''ध्यान प्रशिक्षण योजना'' जो परोपकारी त्रिका मार्च (प्रथम) २०१५ में प्रकाशित है व पहले भी ई बार प्रकाशित/प्रचारित हुई है, क्या है?

२. पौराणिक कहे जाने वाले भाइयों में मृतक-भोज ०वाँ या तेरहवीं का रिवाज है, जिसमें लोगों को आमन्त्रित र भोजन खिलाया जाता है तथा ब्राह्मण को दान देकर ूजा-पाठ आदि भी कराया जाता है।

उक्त हवन के लिये आर्य समाज के पुरोहित या अन्य ोगों को भी बुलाया जाता है।

तो क्या हवन आदि कराने हेतु जाना चाहिये अथवा नहीं।

समाधान- (क) ध्यान/उपासना के लिए यम-नियम प योगाङ्गों का अनुष्ठान अनिवार्य है। इसको महर्षि तञ्जलि अपने योगदर्शन में कहते हैं। महर्षि दयानन्द ने ो इस तथ्य को अनिवार्य कहा है। महर्षि उपासना प्रकरण ग्वेदादिभाष्यभूमिका में लिखते हैं- '..........इन पाँचों ा ठीक-ठीक अनुष्ठान करने से उपासना का बीज बोया ाता है।'' ऋषियों के इन मन्तव्यों से तो यही ज्ञात हो रहा कि ध्यान-उपासना के लिए यम-नियम का पालन करना निवार्य है।

अब हम थोड़ा विचार इन आठ अङ्गों पर कर लेते । इन योगाङ्गों की व्याख्या करते हुए प्राय: उपदेशक वर्ग को सीढ़ी की भाँति बताया करता है, अर्थात् जैसे ऊपर ढ़ने के लिए हम सीढ़ी का प्रयोग करते हैं। सीढ़ी से ढ़ने के लिए पहले हम प्रथम सीढी पश्चात् दूसरी, तीसरी आदि का प्रयोग करते हैं, पहली से अन्तिम पर नहीं पहुँच जाते वहाँ तो क्रम है। ऐसे ही इन योगाङ्गों की व्याख्या की जाती है, अर्थात् पहले यम को सिद्ध करें फिर नियम को पश्चात् आसन को आदि।

किन्तु यह जो सीढी की तरह कहना दिखाना है, युक्ति युक्त नहीं है, क्योंकि बिना यम-नियम के पालन से भी व्यक्ति आसन लगा सकता है, प्राणायाम कर सकता है। यदि ऐसा न होता तो कोई आसन, प्राणायाम न कर सकता था, इसलिए यह सीढी वाला उदाहरण योगाङ्गों में घटाना सर्वाथा युक्त नहीं है।

इसमें यह अवश्य समझना चाहिए कि व्यक्ति जितना-जितना यम-नियम का पालन करता जायेगा, वह उतना-उतना धारणा, ध्यान की ओर अग्रसर होता चला जायेगा। कोई यह न समझे कि जब इन यम-नियम को पूरी तरह सिद्ध कर लूँगा, तब ही ध्यान करूँगा। ध्यान का अभ्यास यम-नियम की प्रारम्भिक अवस्था से किया जा सकता है। हाँ, ध्यान की ऊँची अवस्था तो यम-नियम के पूर्ण रूप से पालन करने पर ही होगी, किन्तु प्रारम्भ में भी जब व्यक्ति सात्विक भाव से युक्त होकर ध्यान करता है तो उसको भी प्रारम्भिक ध्यान का आनन्द तो आयेगा ही।

इतना सब लिखने का तात्पर्य यही है कि सर्वथा यम-नियम से रहित व्यक्ति तो ध्यान नहीं कर सकता अपितु जो जितने अंश में इनका पालन करता है, वह इतने स्तर का ध्यान भी कर सकता है, किन्तु जिस ध्यान की बात महर्षि पतञ्जलि करते हैं, वह ध्यान तो नहीं होगा, फिर भी इस ध्यान को आप गौण रूप में तो देख ही सकते हैं।

आपने परोपकारिणी सभा की ध्यान पद्धति के विषय में पूछा है। इस विषय में आपको बता दें कि इस ध्यान पद्धति की योजना इस कारण बनी कि सब मत-सम्प्रदाय प्राय: अपने-अपने विचार से ध्यान करवाते हैं। हमारे आर्य समाज में संध्या की जाती है। संध्या के बहुत सारे मन्त्र हैं, इन मन्त्रों को सब कोई नहीं जानता। जो नहीं जानता वह भी वैदिक रीति से ध्यान, उपासना कर सके, उसके लिए

ह ध्यानह-पद्धति विद्वानों ने मिलकर तैयार की है। इस यान पद्धति में अवैदिक और सिद्धान्त विरुद्ध कुछ भी हीं है। यह पद्धति ऋषियों की रीति अनुसार विद्वानों द्वारा नर्मित है। इस पद्धति से साधारण से साधारण व्यक्ति भी यान कर सकता है।

इस ध्यान-पद्धति का अनेक लोग लाभ उठा रहे हैं और जिन्होंने इसका प्रशिक्षण परोपकारिणी सभा से लिया है वे प्रशिक्षक होकर अन्यों को भी सिखा रहा है। इस प्रकार इससे अनेक जन उपकृत हो रहे हैं।

जैसे ऊपर कहा जा चुका है कि यह ध्यानह-पद्धति जन साधारण भी कर सके उसके लिए है। उन जन साधारण के लिए तो इस पद्धति को पर्याप्त कह सकते हैं किन्तु जो विशेष अध्यात्म के मार्ग में योग्यता रखते हैं, उनके लिए कदाचित यह पर्याप्त न हो। यह ध्यान-पद्धति दो भागों में विभक्त कर रखी है, एक पन्द्रह मिनट की और दूसरी तीस मिनट की। जो लोग ध्यान करना चाहते हैं किन्तु विशेष योग्यता नहीं रखते, वे इस पन्द्रह मिनट की ध्यान-पद्धति का लाभ उठा सकते हैं और जो कुछ योग्य हैं, उनके लिए तीस मिनट की ये पद्धति है। वे इससे लाभ उठा सकते हैं। किन्तु जो विशेष योग्यता रखते हैं, वे महर्षि वर्णित उपासना प्रकरण व योग दर्शन के अनुसार अपने को प्रगति दे सकते हैं अथवा ध्यान योग शिविरों में इस विषय के योग्य विद्वानों के संग अपना परिष्कार कर सकते हैं। इस विषय में इतना ही।

(ख) समस्त मत-सम्प्रदायों में कहीं-न-कहीं पाखण्ड अंधविश्वास मिल ही जाता है अथवा उनमें पाखण्ड अंधविश्वास है। हमें हिन्दुओं में कुछ अधिक दिखता है। ये लोग बिना विचारे-समझे ही किसी भी पाखण्ड की ओर अग्रसर हो जाते हैं। यहाँ पत्थर, पहाड़, पेड़, नदी, नाले, समुद्र, पोखर, यहाँ तक की मल को भी पूजने वाले लोग मिलते हैं। अपराधी गुरु बनकर पूजा जा रहा है। गुरु के रूप में आकर जनता को ठगना और अपने गुरु रूपी आडम्बर की आड़ में अधिक-से-अधिक अपराध करना, ऐसा होते हुए भी देश की जनता का उनको पूजना-कितनी विडम्बना की बात है।

परमेश्वर को छोड़ गुरु की पूजा-अराधना करना, माता-पिता, आचार्य का उपदेश न मान, ढोंगी गुरु की बातें अपनाना, अनर्थ ही तो है।

इसी प्रकार मृतक श्राद्ध आदि की कथा है। जीवित मनुष्यों की सेवाह-सुश्रुषा न कर करने के बाद उनको तृप्त करने का पाखण्ड करना, मरने के बाद दस दिन वा तेरह दिन तक व्यर्थ के कार्य करना, जब कि वेद व ऋषियों का मन्तव्य है कि मरने के बाद उसको दाह-संस्कार कर, तीसरे दिन अस्थि चयन कर उन अस्थियों को कहीं दबा कर शुद्ध हो जाना, इसके उस मृत व्यक्ति के लिए कोई भी कार्य शेष नहीं रह जाता, फिर भी ये तेहरवीं वाली परम्परा तो चला ही रखी है। इस दिन प्रायः पूजा-पाठ, हवन आदि करवाये जाते हैं। आपका कथन है कि इनके यहाँ आर्य समाज का पुरोहित व अन्य जनों को जाना चाहिए वा नहीं। इस पर हमारा कथन है कि जाने में तो कोई दोष नहीं है। यदि आर्य पुरोहित जायेगा तो वैदिक रीति से कर्मकाण्ड करेगा, कुछ अच्छा उपदेश करेगा, जिससे कुछ लोगों पर इसका प्रभाव भी पड़ेगा। हाँ, वहाँ जाकर यदि उनकी पाखण्ड की बातों का समर्थन करता है या उनके अनुसार कर्मकाण्ड करता है, तो अनुचित है यदि हमें ज्ञात हो कि वहाँ जाने पर हमारे ऊपर इस पाखण्ड को करने का दबाव डाला जायेगा और हम उस दबाव का विरोध नहीं कर सकते, तो वहाँ नहीं जाना चाहिए। सामान्य रूप में जाने से कोई हानि नहीं है, जाया जा सकता है।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है वैसे ही राजा को भी चाहिये कि प्रजा को अपनी न्याय व्यवस्था से सुख देवे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३

जब तक सब की रक्षा करने वाला धार्मिक राजा वा आप्त विद्वान् न हो तब तक विद्या और मोक्ष के साधनों को निर्विघ्नता से पाने के योग्य कोई भी मनुष्य नहीं होता है और न मोक्षसुख से अधिक कोई सुख है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५

परमेश्वर ही सच्चा गणेश है

– इन्द्रजित् देव

''आर्य वन्दना'' के जनवरी अंक में गणेश की महिमा षयक एक लेख प्रकाशित हुआ है जो पूरी तरह से ाणिकता से भरपूर है। लेखक महोदय के अनुसार गणेश पूजा के पीछे यह धारणा कार्य करती है कि इससे भी सुख, सौभाग्य तथा समृद्धि की प्राप्ति होती है तथा वन में सभी बाधाओं एवं विघ्नों से मुक्ति मिलती है। खक ने यह भी लिखा है कि पार्वती ने अपने शरीर पर ना उबटन लगा रखा था कि जिससे एक मनुष्य का ला बन सके। पार्वती ने फिर उसमें प्राण फूँके और उसे पना पुत्र बनाया। यह भी लेख में लिखा है कि शिव ने हा जो संसार का चक्कर लगाकर प्रथम आएगा, वही थम पूजनीय होगा तथा सभी देवता तेजी से दौड़े परन्तु णेश नामक शिव का पुत्र न दौड़ सका क्योंकि उसका रीर भारी था। गणेश ने अपने माता-पिता का ही चक्कर गाया एवं उन्हें प्रणाम करके बैठ गये, अत: गणेश प्रथम ज्य बन गया इत्यादि।

पूरा लेख अवैज्ञानिक, तर्कहीन व प्रमाणहीन है। लेखक होदय इसे ''कल्याण'' या किसी अन्य पौराणिक पत्रिका छपा लेते तो उनकी उपरोक्त बातों का कोई विरोध न ता, परन्तु एक वैदिक पत्रिका में यह प्रकाशित हुआ है, त: इसे पढ़कर हमें आश्चर्य व दु:ख हुआ है। इसके र में कुछ बातों को तर्क व विज्ञान के आधार पर खना वाञ्छनीय है, ताकि आर्य समाजियों को तो सत्य ज्ञान हो सके तथा वे भ्रम में न रहें।

हमारे कुछ प्रश्न लेखक से हैं:- यदि स्त्री के शरीर उबटन लगा लेने से पुत्र का शरीर बन सकता है तो र ने पुरुष को क्यों उत्पन्न किया? पार्वती हो या कोई य स्त्री, उसके शरीर में गर्भाशय की स्थापना ही क्यों ? वेदानुसार विवाह का मुख्य उद्देश्य उत्तम सन्तान न्न करना है। यदि पार्वती बिना पति के पुत्र को उत्पन्न ने की कला जानती थी तो उसने शिव से विवाह ही किया? क्या शिव में कोई कमी थी। उबटन से पुत्र- । की विद्या का उल्लेख किस वेद या किस आयुर्वैदिक वा एलोपैथिक ग्रन्थ में है? उबटन लगाकर सोने से व्यक्ति के शरीर से वह झड़ या उतर जाना चाहिये परन्तु पार्वती ने उतरने नहीं दिया, तभी तो उबटन से पुत्र बना लिया व फूँक मारकर उसे चेतन गणेश बना दिया। लेखक को चाहिए कि इस ईलाज का बांझ स्त्रियों में प्रचार करें ताकि वे भी अपने शरीर पर उबटन लगा लिया करें व जब चाहें, वे अपने उबटन से पुत्र का पुतला बनाकर व उस पुतले में प्राण फूँक कर सन्तानवती बन जाया करें। वे पति तथा वैद्य-डॉक्टर की सहायता लेने की आवश्यकता से मुक्त हो जाया करेंगी। प्राण फूँकने से पुत्र में आत्मा आती है तो मृत पुत्र की किसी भी माता को आज तक पुत्र-वियोग का दु:ख क्यों भोगना पड़ता रहा है? पुत्र की मृत्यु होने पर पुत्र का शरीर तो घर में पड़ा होता है। पार्वती की तरह पुत्र की माता उस मृत देह में फूँक मार कर पुत्र को जीवित कर लिया करें। यह फार्मूला बताने के लिए हम लेखक के बहुत धन्यवादी रहेंगे।

पार्वती ने अपने उबटन से उत्पन्न किए गणेश को घर के बाहर बैठा दिया, ताकि वे निश्चित होकर स्नान कर सकें व कोई भी व्यक्ति भीतर प्रवेश न कर सके, परन्तु शिवजी स्वयं को न रोक सके व पुत्र गणेश व पिता शिव के मध्य युद्ध छिड़ गया। परिणामत: पुत्र का सिर काटकर शिव जी भीतर प्रवेश कर गए। पार्वती ने हाहाकार मचाया तो शिव ने एक हथिनी का सिर जोड़कर पुत्र को पुन: जीवित कर दिया। हमारी इच्छा विद्वान लेखक से यह जानने की है जिस शिवजी को पौराणिक व लेखक स्वयं ईश्वर मानते हैं, उसके घर में इतनी अधिक गरीबी क्यों थी कि वह अपने घर में दरवाजा बन्द करके स्नान करने योग्य एक बाथरूम भी नहीं बनवा सका? जब इतनी निर्धनता थी ही तो वह ईश्वर कैसे कहला सकता है, क्योंकि ईश्वर का अर्थ ऐश्वर्यशाली होता है। लेखक को यह भी बताना होगा कि जब शिवजी की पत्नी घर के भीतर स्नान कर रही थी तथा उनके पुत्र गणेश ने उन्हें भीतर जाने से रोका तो वे रुके क्यों नहीं? भीतर जाने का उनका उतावलापन उनके संयम की पोल खोलता है। इतना उतावलापन उनमें था कि भीतर जाने से रोकने वाले अपने पुत्र का सिर भी काटना उन्हें

अधर्म प्रतीत नहीं हुआ। किसी का सिर जब कटेगा तो उसके शरीर से उसके प्राण व उसकी आत्मा निकल जाएगी, यह एक दृढ़ वैज्ञानिक नियम है। तत्पश्चात् कोई भी पिता, माता, राजा, वैज्ञानिक या गुरु तो क्या, स्वयं ईश्वर भी पुनः प्राण तथा आत्मा को उसी शरीर में प्रवेश नहीं करा सकता।

लेखक के अनुसार जब पार्वती ने अपने पति के समक्ष पुत्र वियोग का दुखड़ा रोया, शिव ने एक हथिनी का सिर सिरहीन पुत्र के सिर पर फिट करके जीवित कर दिया। हमारा प्रश्न उपरोक्त लेख के लेखक से यह है किस कम्पनी के फैवीकोल या कीलों से गणेश का सिर पुनः फिट किया? आज परस्पर लड़ाई के अनेक मामलों में एक दूसरे के सिर काटे जा रहे हैं। लेखक की मान्यता वाले जिस भी किसी ग्रन्थ में सिरहीन धड़ से किसी अन्य प्राणी का सिर जोड़ने की सफल विधि का उल्लेख है, उस ग्रन्थ की पृष्ठ संख्या सहित नाम व लेखक का नाम बताने की कृपा करें ताकि आज जहाँ कहीं परस्पर लड़ाई में सिर कटते हैं, मैं वहाँ सिर जोड़ने में कुछ सहायता कर सकूँ।

हमारा अगला प्रश्न यह है कि शिव जी में हथिनी का सिर अपने मृत पुत्र के धड़ से जोड़कर पुनर्जीवित करने की योग्यता व क्षमता थी तो उन्होंने अपने पुत्र का पहला सिर ही क्यों नहीं जोड़ दिया? हथिनी की मृत्यु कर के अपने पुत्र को पुनर्जीवित करना कथित ईश्वर शिव की शोभा बढ़ाने वाला कार्य है क्या? कोई भी मनुष्य जिसका धड़ तो मनुष्य का हो परन्तु सिर हथिनी का हो, क्या सूखपूर्वक सो सकेगा?

उपरोक्त लेख के अनुसार एक बार देवों में यह विवाद हो गया कि उन सबमें किस देवता की पूजा सर्वप्रथम होनी चाहिए? शिव ने उन्हें संसार का चक्कर लगाकर आने को कहा। जो दौड़ में सबसे पहले लौटेगा, वही देवता प्रथम पूज्य होगा। गणेश का शरीर भारी था। वह न दौड़ सका। उसने माता-पिता का चक्कर लगाया और प्रणाम करके बैठ गया। अतः प्रथम पूज्य माने गए। हमारा निवेदन यह है कि प्रथम पूज्य देव का निर्णय करने का लाईसैंस (=अधिकार) शिवजी को किसने दिया? उसका निर्णय मान्य क्यों होना चाहिए? वे देव क्यों कर माने जा सकते हैं, जब परस्पर उनमें होड़ मची हुई थी कि मेरा पूजन सर्वप्रथम होना चाहिए? लोकैषणा रहित व्यक्ति देवता होता है जबकि लोकैषणायुक्त (=प्रशंसा प्राप्त करने की इच्छा करने वाला) व्यक्ति मनुष्य कहलाता है, देवता तो कदापि मान्य हो ही नहीं सकता। यहाँ हम आचार्य यास्क द्वारा निरुक्त ७/११ में वर्णित देवों का वर्णन करना उचित समझते हैं- देवो दानाद्वा दीपनाद्वा द्योतनाद्वा द्युस्थाने भवतीति वा। इसके अनुसार निम्नलिखित कुछ मूर्तिमान व कुछ अमूर्तिमान देव ये होते हैं:-

१. दान देने वाले= मनुष्य, विद्वान् व परमेश्वर।

२. दीपन, प्रकाश करने वाले= सूर्यादि लोक, सब मूर्तिमान द्रव्यों का प्रकाश करने वाले।

३. द्योतन करने वाले= सत्योपदेश करने से भी देव अर्थात् माता, पिता , आचार्य व अतिथि तथा पालन, विद्या व सत्योपदेशादि करने वाले।

४. द्युस्थान वाले देव= सूर्य की किरण, प्राण तथा सूर्यादि लोको का भी जो प्रकाश करने हारा है, वह परमेश्वर देवों का भी देव है।

५. अन्य देव= इन्द्रियाँ, मन। ये शब्दादि विषयों तथा सत्यासत्य का प्रकाश करते हैं। वेद मन्त्र भी देव हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ''सत्यार्थप्रकाश'' के सप्तम समुल्लास में इस विषय में लिखते हैं- ''देवता दिव्य गुणों से युक्त होने के कारण कहते हैं, जैसी कि पृथिवी।.........जो त्रयस्त्रिशनिशता'' इत्यादि वेदों में प्रमाण हैं, इसकी व्याख्या 'शतपथ' में की है कि-तैंतीस देव अर्थात् पृथिवी, जल, अग्नि, वायु,आकाश, चन्द्रमा,सूर्य और नक्षत्र सब सृष्टि के निवास स्थान होने से ये आठ वसु हैं। प्राण, अपान, व्यान, उदान, सामान, नाग, कूर्म्म, कृकल, देवदत्त, धनञ्जय और जीवात्मा, ये ग्यारह रुद्र इसलिए कहाते हैं कि जब शरीर को छोड़ते हैं, तब रोदन कराने वाले होते हैं। संवत्सर के बारह महीने बारह आदित्य इसलिए कहाते हैं कि ये सब की आयु को लेते जाते हैं। बिजली का नाम इन्द्र इस हेतु है कि वह परम ऐश्वर्य का हेतु है। यज्ञ को प्रजापति कहने का कारण यह है कि जिससे वायु, वृष्टि, जल, औषधी की शुद्धि, विद्वानों का सत्कार और नाना प्रकार की शिल्पविद्या से प्रजा का पालन होता है। ये तैंतीस पदार्थ पूर्वोक्त गुणों के योग से देव कहाते हैं।

लेखक सत्यपाल भटनागर जी से अनुरोध है कि

परोक्त विवरण व व्याख्या को ध्यान से पढ़ने का कष्ट करें व पाठकों को स्पष्ट करें कि कौन-से वे देव थे जिनमें पनी पूजा प्रथमत: कराने की थी? वास्तविकता यह है क उपरोक्त देवों से अतिरिक्त काल्पनिक देवों की धारणा खक के मस्तिष्क में है। उसे त्याग दें व केवल उपरोक्त ास्तविक देवों की मान्यता स्थापित करें।

लेखक जी! पुत्र को अपने माता-पिता का आदर व थोचित सेवा करनी ही चाहिए, यह निर्विवाद है, परन्तु णेश की तरह माता-पिता की परिक्रमा कर लेना न तो कसी प्रकार की सेवा है तथा न ही इस कार्य में तनिक भी ादर करने का भाव है। गणेश के मन में भी अपनी पूजा र्वप्रथम कराने की ही इच्छा थी जिसे शास्त्रीय भाषा में ोकैषणा कहते हैं। हम लेखक महोदय को स्मरण दिलाना ाहते हैं कि इतिहास में माता-पिता का आदर व उचित वा करने वाले कई सुपुत्रों के प्रमाण उपलब्ध हैं। श्रवण मार तथा मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र इत्यादि के कार्यों को यान में रखकर सोचिए व पाठकों को बताइए कि माता-पता के शरीरों की परिक्रमा करने वाले गणेश में सुपुत्र के ण थे अथवा श्रवण कुमार में? रामचन्द्र जी ने तो राजभवन सुख-सुविधाओं का परित्याग करके १४ वर्षों तक वनों रहकर अपने पिता की प्रतिष्ठा तथा सौतेली माँ की इच्छा ी रक्षा की थी। गणेश के जीवन में सेवा की एक भी टना जब उपलब्ध नहीं होती तो उसका पूजन सर्वप्रथम रने-कराने में औचित्य क्या है? सर्वप्रथम पूजन करने-राने की किसी व्यक्ति की यदि इच्छा है तो श्रवण कुमार थवा रामचन्द्र जी की। वैसे आज न गणेश संसार में है,न श्रवण कुमार कहीं दिखते हैं तथा न ही रामचन्द्र जी हीं मिलते हैं। उनकी पूजा कैसे करोगे- कराओगे? केवल त्रों, मूर्तियों या थाली में जल रही धूप अगरबत्ती को त्था टेकने का नाम पूजा करना नहीं है। पूजा का अर्थ हर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ''आर्योद्देश्यरत्नमाला'' में स प्रकार लिखा है- ''जो ज्ञानादि गुण वाले को यथायोग्य त्कार करना है, उसको 'पूजा' कहते हैं।'' आज जो कुछ रहा है, वह पूजा न होकर अपूजा है, क्योंकि महर्षि यानन्द सरस्वती ने ''आर्योद्देश्यरत्नमाला'' में यह भी लखा है- ''जो ज्ञानादि रहित जड़ पदार्थ और जो सत्कार योग्य नहीं है। उसका जो सत्कार करना है, वह ''अपूजा'' है।'' थोड़ी देर के लिए हम बहस के लिए मानते हैं कि गणेश ने अपने माता-पिता की परिक्रमा की थी, इसलिए सर्वप्रथम उसी की पूजा करनी चाहिए तो प्रश्न उत्पन्न होगा कि जिस गणेश ने वह कार्य किया था, वह ही आज कहाँ नहीं है। पत्थर की बनी मूर्ति या कागज में दिख रहा गणेश वास्तविक गणेश नहीं है। आप पत्थर या कागज की पूजा कराते हैं जो जड़ पदार्थ हैं, ज्ञानरहित, क्रिया रहित हैं। इनका सत्कार हो नहीं सकता, अत: इस कथित गणेश से जो कुछ करते हो, वह अपूजा है व इससे कुछ लाभ नहीं होता, हानि अवश्य होती है।

गणेश का पूजन करना है तो पहले गणेश शब्द का अर्थ समझना चाहिए। 'गण संख्याने' इस धातु से गण शब्द सिद्ध होता है। उसके आगे ईश शब्द लगाने से गणेश शब्द सिद्ध होता है। **'गणानां समूहानां जगतामीशः स गणेशः'** अर्थ= सब गणों नाम संघातों का अर्थात् सब जगतों का ईश स्वामी होने से परमेश्वर का नाम गणेश है।

-सत्यार्थप्रकाश, प्रथम समुल्लास

परमेश्वर के अनेक गुणवाचक, कर्मवाचक, सम्बन्धवाचक नाम हैं। इनमें शिव, गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र तथा सरस्वती आदि नाम भी हैं। वेद क्योंकि सृष्टि के प्रथम दिन ईश्वर ने दिए थे, उस दिन इन नामों के शरीरधारी मनुष्य कोई न थे। सामाजिक व्यवहार के लिए मनुष्यों के नाम रखना आवश्यक होता है, अत: वेदों में प्रयुक्त शब्दों को अपने व अपनी सन्तान के नाम करण हेतु प्रयोग करना पड़ा था। आज भी ऐसा ही होता है। वेद में यदि गणेश व शिवादि की पूजा का आदेश है तो वह सदैव रहने वाले अशरीरी गणेश से ही अभिप्रेत है, न कि बाद में शरीरधारी हुए किसी गणेश नामक व्यक्ति से। परमेश्वर से बड़ा विघ्नहारी कौन होगा? विस्तार से इस विषय को समझने हेतु ''सत्यार्थप्रकाश'' का प्रथम समुल्लास पढ़ना चाहिए। 'शिवपुराण' व अन्य सभी पुराणों को महर्षि दयानन्द जी ने 'सत्यार्थप्रकाश' के तृतीय समुल्लास ''संस्कार विधिः'' के वेदारम्भ संस्कार तथा ''ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका'' के ग्रंथ प्रामान्याप्रमाण्य विषय के अन्तर्गत पठन-पाठन हेतु त्याज्य ग्रंथों में रखा है। फिर लेखक ने आर्य समाजी होते हुए ग्रहण क्यों किया?

-चूना भट्ठियाँ, सिटी सेंटर के निकट, यमुनानगर, हरि.

ब्रह्मकुमारियों के षड़यंत्र से सावधान

- स्वामी पूर्णानन्द

लगभग ५८ वर्ष पहले स्वामी पूर्णानन्दजी द्वारा लिखा गया यह आलेख आज भी हमें सावधान करता है।

-सम्पादक

सब हिन्दू धर्मावलम्बी सज्जनों की सेवा में निवेदन किया जाता है कि लगभग २ वर्ष से मेरठ में ब्रह्माकुमारियों का एक गुप्त आंदोलन चल रहा है जो हिन्दू धर्म और हमारी संस्कृति के मौलिक सिद्धान्तों को जड़-मूल से उखाड़ कर फैंकने में प्रयत्नशील है, आर्य समाज इसको आशंका की दृष्टि से देखता है। दैवयोग से दिनांक ११.१२.५६ को हमें ब्रह्माकुमारियों की ओर से उनके एक उत्सव में सम्मिलित होने का निमंत्रण मिला और साथ ही हमें यह आश्वासन भी मिला कि ब्रह्माकुमारियों के उपदेश के पश्चात् आप लोगों को शंका-समाधान के लिये समय दिया जायेगा।

हम सांय ६ बजे शर्मा स्मारक में पहुँच गये, जहाँ उनका उत्सव हो रहा था। हमने २ घंटे तक उनके व्याख्यानों को सुना और व्याख्यान की समाप्ति पर शंका-समाधान के लिये समय माँगा, परन्तु उन्होंने उत्तर देना स्वीकार न किया और टाल दिया कि हमारा नियम बहस करने का नहीं। उनके इस व्यवहार से हमें निश्चय हो गया कि यह केवल एक षड़यत्र है, जिसके द्वारा हिन्दू देवियों को अपने पाखण्ड़ के जाल में फँसाना है, इसलिये हम हिन्दू भाई-बहनों को सावधान करते हैं कि वह इनके भुलावे में न आवें।

पोल खोलने हेतु उनकी पुस्तकों के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं-

२० वर्ष पूर्व सिंध के एक व्यक्ति लेखराज ने एक कीर्तन मण्डली बनाई, जिसमें केवल स्त्रियाँ ही जाती थी। वह कीर्तन मण्डली लेखराज के घर पर ही लगती थी। रात्रिभर कीर्तन और रासलीला होती थी। अपने पाखण्ड पर पर्दा डालने के लिये इस मण्डली का नाम 'ओ३म् मण्डली'-रखा गया। जब लेखराज के पास पर्याप्त संख्या में कुँआरी कन्याएँ और विवाहिता स्त्रियाँ आने-जाने लगीं तो उसने कहना प्रारम्भ किया कि भगवान चतुर्भुज विष्णु ने मेरे अंदर प्रवेश किया है, मैं गोपीवल्लभ भगवान कृष्ण हूँ। इस महाघोर कलिकाल में पाप बहुत बढ़ रहे हैं, उनको मिटाने के लिये मेरे शरीर में भगवान का अवतरण हुअ है। अपने पास आने वाली कन्याओं और स्त्रियों को कह कि तुम पूर्व जन्म की गोपियाँ हो, उनमें से एक को राध बतलाया।

स्त्रियों को कहा कि तुम्हारे सम्बंधी (भाई, पति, माता पिता इत्यादि) तुम्हारे विकारी सम्बंधी हैं, वे तुम्हारे वास्तविक सम्बंधी नहीं, वे तो तुम्हारे शत्रु हैं। वे कंस और जरासंध जो तुम्हें गृहस्थ रूपी जेल में रखना चाहते हैं। तुम्हारा नित सम्बंध तुम्हें मेरे पास आने से रोकें तो मत मानों। लेखराज के इस प्रचार का यहा प्रभाव हुआ कि बहुत सारी कुँआर कन्याओं और स्त्रियों ने अपने सम्बंधियों की मार्यादाओं के अंदर रहने से इंकार कर दिया। इससे सिंध की हिन् जनता कुलबुला उठी।

उन कन्याओं के वारिसों ने लेखराज के ऊपर मुकदम चलाया, जिसके फलस्वरूप न्यायालय ने लेखराज क अपराधी ठहरा कर जेल भेज दिया और सरकार ने ओ३ मण्डली पर प्रतिबंध लगा दिया। जेल से छूटने के पश्चा लेखराज कराँची से भागकर भारत में आ गया औ माउंटआबू पर अपना अड्डा बनाकर उसी मण्डली का ना बदल कर राजस्व अश्वमेघ अविनाशी ज्ञानयज्ञ रखा।

इस मण्डली में इस समय ५५ स्त्रियाँ और ६८ कन्या हैं जो अपने माता-पिता और भाई-बंधुओं को छोड़क अपने घरों से भाग आई हैं। इन्होंने १४ बड़े-बड़े नगरों अपने केन्द्र खोले हुए हैं। एक-एक केन्द्र में कई-क स्त्रियाँ रहती हैं। हिन्दुओं को धोखें में डालने के लिये इ स्त्रियों का नाम ब्रह्माकुमारियाँ रखा हुआ है। वे लोगों घरों में जाती हैं और नौजवान स्त्रियों को सब्जबाग दिख कर अपने काबू में कर लेती हैं।

शुरू-शुरू में भगवान कृष्ण आदि हिन्दू देवता का नाम लेकर और श्रीमद्‌भगवद्‌गीता की बातें सुना क उन पर यह प्रभाव डालती हैं कि हम भी हिन्दू ही हैं अ हम तुम लोगों को सहज योग सिखाती हैं। परंतु आहिस्ता

ाहिस्ता जब स्त्रियाँ इनके जाल में फँस जाती हैं तो हिन्दू र्म और उसके धार्मिक ग्रंथों-यथा वेद, उपनिषद्, गीता, हाभारत, रामायण, स्मृतियाँ, पुराण, इतिहास और दर्शन ास्त्रों की निंदा करने लगती हैं। वे हिन्दुओं की भक्ति, ूजा-पाठ, जप-तप, यम-नियम, संध्या और गायत्री को ूठा बतलाती हैं और कहती हैं कि लेखराज का ध्यान करने से ही इस लोक और परलोक की सिद्धि हो सकती और यह कि लेखराज ही परम पिता परमात्मा त्रिमूर्ति गवान शिव हैं।

उनकी पुस्तकों के कुछ उदाहरण पाठकों की जानकारी क लिये नीचे दिये जाते हैं:-

१. 'घोरकलहयुग विनाश' नाम की पुस्तक के पृष्ठ-२ पर लिखा है कि ''बुतपरस्त हिन्दू कहलाने वाली कौम व्याभिचारी भक्तिमार्ग में फंस कर इतनी बुतपरस्त न गई है कि अपने शास्त्रों में अपने देवताओं के अनेक नोमय चित्र बनाकर उन्हें कलंकित किया है। वे अपने ास्त्रों में लिखते हैं कि ब्रह्मा अपनी बेटी सरस्वती पर ोहित हुआ, शिव मोहनी के ऊपर मोहित होकर उसके ीछे पड़ा।''

२. इसी पुस्तक के पृष्ठ - १३ पर लिखा है- ''वास्तव ं परमात्मा का अवतार एक ही है, जो कल्प-कल्प के ंगम पर एक ही बार भारतवर्ष में साधारण स्वरूप में बूढ़े न (लेखराज के बूढ़े शरीर) में गुरु ब्रह्मा नाम से प्रत्यक्ष ोता है, न कि अनेक रूपों से अनेक बार, जैसा कि ढ़मति हिन्दू लोग शास्त्रों में दिखाते हैं।''

३. फिर उसी पृष्ठ पर लिखा है- ''हिन्दू लोगों के ड़े-बड़े गुरु, विद्वान, आचार्य, पण्डित इत्यादि इतना भी हीं जानते कि गीता में जो महावाक्य नूधे हैं, वे किसके हैं ौर भागवत में किसका चरित्र गाया गया है। वे समझते हैं क गीता श्रीकृष्ण ने उच्चरण की है और भागवत में भी श्री ष्ण का जीवन चरित्र नूधा हुआ है, जिस कारण 'कृष्णम् दे जगत् गुरूम्' गाते हैं, यह इनकी बड़ी भारी भूल ।''.........श्रोमणी भगवद्गीता से हम सिद्ध कर सकते हैं क गीता में श्रीकृष्ण के महावाक्य नहीं हैं, बल्कि परमात्मा मूर्ति गुरु ब्रह्मा (लेखराज) के महावाक्य हैं।

४. ''रामायण भी श्रीरामचन्द्र का जीवन-चरित्र सिद्ध हीं करती।.... वास्तव में रामायण तो एक नावल (उपन्यास) है, जिसमें तो एक सौ एक प्रतिशत मनोमय गपशप डाला गया है।''-उसी पुस्तक का पृष्ठ-१४

५. फिर उसी पुस्तक के पृष्ठ-१६ पर लिखा है- ''पिता श्री परमात्मा गुरु ब्रह्मा की कल्प पहले वाली गाई गीता में महावाक्य है कि भक्तिमार्ग के अनेक प्रयत्न जैसे कि वेद अध्ययन,यज्ञ, जप, तप, तीर्थ, व्रत, नियम, दान, पुण्य,संध्या, गायत्री, मूर्तिपूजा, प्रार्थना इत्यादि करने से मैं नहीं मिलता।''

६. 'ब्रह्माकुमारियों की संस्था का परिचय' नाम की पुस्तक में लिखा है- ''भागवत प्रसिद्ध गोपियाँ श्री ब्रह्मा की हैं न कि श्रीकृष्ण की।''-पृष्ठ ४

७. श्रीकृष्ण को योगीराज अथवा जगत्गुरु अथवा जगत्पिता नहीं कहा जा सकता...श्री कृष्ण सृष्टि को ज्ञान नहीं देते।''-पृष्ठ-६

८. 'घोर कलहयुग विनाश' में लिखते हैं -''हर एक नर-नारी अपने से पूछे कि मैं अपने परमपिता निराकार परमात्मा और साकार ईश्वर पिता गुरु ब्रह्मा और मातेश्वरी श्री सरस्वती आदम और बीवी (हव्वा) के नाम, रूप निवास-स्थान और अवतार धारण करने के समय को जानता हूँ।''-पृष्ठ - १

९. उसी में लिखा है -''जो साकार विश्वपिता आदिदेव त्रिमूर्ति गुरु ब्रह्मा, दैवी पिता इब्राहिम, बुद्ध और क्राइस्ट हैं जो हर एक कल्प-कल्प अपने-अपने समय पर अपने-अपने वारिसों सहित अपना-अपना देवी-देवता इस्लामी, बौद्ध और क्रिश्चियन घराना स्थापन करने अर्थ निमित बने हुए हैं।''- पृष्ठ -२

पाठक इस थोड़े से लेख से समझ सकते हैं कि हिन्दुओं को अपने स्वधर्म से भ्रष्ट करने के लिये ब्रह्माकुमारियों का यह कितना भयंकर षड़यंत्र रचा हुआ है, इसलिये हिन्दुमात्र से सानुरोध निवेदन है कि आगामी विनाश को दृष्टि में रखकर भेड़ों की खाल में ढकी हुई इन भेड़िनों को अपने घरों में आने से सर्वथा रोक दें और अपने स्त्री-बच्चों को इनकी काली करतूतों से परिचित करा देवें। इनके विशेष परिचय के लिये शीघ्र ही और साहित्य आपकी सेवा में प्रस्तुत किया जायेगा।

संकलन - डॉ. वीरोत्तम तोमर,

सौजन्य से-आर्यशिखा स्मारिका, नवम्बर-२०१४ मेरठ शहर

'परोपकारिणी-सभा' में भाषण
(अजमेर-२१-११-२०१५)

-एम.वी.आर. शास्त्री

मान्यश्री अध्यक्ष महोदय श्री................,

महा विद्वान् पण्डित राजेन्द्र जिज्ञासु जी......,

मंच पर विराजमान अन्य दिग्गजों..........,

देश के कोने-कोने से पधारे हुए आर्य बंधुजनों और यहाँ उपस्थित सभी सज्जनों को मेरा प्रणाम।

परमपूज्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित 'परोपकारिणी सभा' द्वारा आयोजित इस महत्त्वपूर्ण ऋषि-मेला के वार्षिक कार्यक्रम में भाग लेना, मेरे लिए परम सौभाग्य की बात है। वेदविद् श्री दयानन्द सरस्वती के चरण-स्पर्श से पवित्र बने इस पुण्य-स्थल के दर्शन करने और इतनी बड़ी संख्या में वेद विद्या विशारदों तथा वैदिक धर्म के पुनरूत्थान के लिए प्रतिबद्ध आर्य धर्मावलंबियों के समक्ष मुझे अपने विचारों को प्रकट करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। यह मेरे लिए परम सौभाग्य की बात है।

महर्षि दयानन्द जी से प्रेरणा पाकर, उन्हीं के विचारों में अटूट श्रद्धा रखकर आर्य समाज और हिन्दू जाति को सुधार के पथ पर ले जाकर , देश की सेवा करने में विशिष्ट भूमिका निभाने वाले महात्मा श्रद्धानन्द जी की जीवनी से सम्बन्धित विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए **'असलु महात्मुडु' (सच्चा महात्मा)** शीर्षक देकर मैंने जो ग्रन्थ लिखा, उसका विमोचन आप के समक्ष करना, मेरे लिए अतीव प्रसन्नता की बात है। महापंड़ित राजेन्द्र जिज्ञासु जी और इस कार्यक्रम के आयोजकों ने मुझे यह सुअवसर प्रदत्त किया है। इस अवादान के लिए मैं इनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट कर रहा हूँ।

आधुनिक युग में कई ऐसे व्यक्ति हो सकते हैं, जो किसी के द्वारा प्रदत्त न किए जाने पर भी 'महात्मा' उपाधि को अपने नाम के साथ जोड़कर इस समाज में स्वयं को विशेष ख्याति के योग्य घोषित कर रहे हैं। महर्षि श्रद्धानन्द जी भारतवासियों के लिए प्रात: स्मरणीय हैं। जब गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका में रहते थे, उन्हीं दिनों महर्षि श्रद्धानंद जी 'महात्मा' के रूप में भारत में प्रसिद्ध हुए थे। स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार भारतीय इतिहास में अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यों को गलत ढंग से परिभाषित करने और कुछ तथ्यों को उपेक्षित करने के षड्यन्त्र के परिणामस्वरूप वर्तमान पीढ़ी के लोग इन तथ्यों की जानकारी प्राप्त करने से वंचित हो गये कि इस पुण्य भूमि में अवतरित हो कर एक महान विभूति ने धर्म का परीक्षण किया और समाज को स्वस्थ दिशा देने का भरसक प्रयास किया। इन दिनों आर्य जाति के अस्तित्व को प्रश्न चिह्न बनाकर हमारे जीवन को तनावपूर्ण बनाने वाली समस्याओं और चुनौतियों को सही ढंग से समझने और डटकर उनका सामना करने की समझ स्वामी श्रद्धानन्द जी के सन्देश देते हैं। इसी उद्देश्य को लेकर स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन और उनकी उपलब्धियों से अवगत कराने में मैंने इस ग्रन्थ में, अपनी सीमाओं में, प्रयत्न किया है।

भारत की वर्तमान स्थिति कैसी रही? उन लोगों के लिए चिन्ताजनक कोई बात नहीं दिखाई देती है जो टी.वी. में क्रिकेट मैच देखने, पत्रिकाओं में प्रकाशित कई अपराधों से सम्बन्धित समाचार को बड़े चाव से पढ़ने, चलचित्रों, फैशन परेडों और स्पेशल ऑफरों के बारे में चर्चा करने की आदत रखते हैं। सत्तारूढ़ दल के समर्थकों को लगता है कि देश का सर्वनाश हो रहा है। अपनी-अपनी राजनीतिक प्रतिबद्धताओं और वैयक्तिक रूचि-अरूचि को बगल में रखकर, समग्र एवं ईमानदार दृष्टि से अवलोकन करने पर भारत की वर्तमान परिस्थितियाँ, सामाजिक मान्यताओं में बदलाव और विचार हर देशभक्त के लिए चिंताजनक सिद्ध हो रहें हैं।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि इन दिनों हम सब सच्चाई का सामना करने से कतराने लगे हैं। अनावश्यक विषयों के बारे में सोचने को प्राथमिकता देने लगे हैं। अपनी पतनावस्था के कारकों को पहचानना हम नहीं चाहते

ं। हम हैं कौन?, कहाँ से आये हैं? किस संस्कृति और ज्ञान-विज्ञान के वारिस हैं? इनसे हम दूर क्यों हो गये हैं? इन प्रश्नों के उत्तर को प्राप्त करने का हम प्रयत्न नहीं कर रहे हैं। जो लोग इन प्रश्नों के सही उत्तर जानते हैं वे भी इन विडंबनाओं को मिटा कर अतीत कालीन गौरव की पुनः प्राप्ति के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में सही कदम उठाने से हिचकिचाने लगे हैं। तरह-तरह की शंकाओं और संकोचों को लेकर व्यथित हो रहे हैं। दृढ़ संकल्प और प्रबल आस्था को लेकर हम कदम आगे नहीं बढ़ा पा रहे हैं।

इस असफलता का कारण क्या है? कमी किसमें है? इस सभा में उपस्थित सदस्य महापंडित और ज्ञानी हैं। आपकी तुलना में मैं बहुत छोटा व्यक्ति हूँ। मैं कोई सन्देश आपको नहीं दे सकता हूँ। लेकिन मैं अपने विचारों को आपके समक्ष रखने का साहस कर रहा हूँ।

मैं समझता हूँ कि वर्तमान भारतीय समाज एक विमूढ और असमंजस की स्थिति में विचलित हो रहा है। इसके पीछे, जिसे कई लोगों ने अंदाजा नहीं लगाया, एक षड्यंत्र है। यह कोई नया षड्यन्त्र नहीं है। गोरे लोगों ने जिस क्षण इस पवित्र भूमि पर चरण धर कर, षड्यन्त्र रचाकर धीरे-धीरे सम्पूर्ण देश को अपने कब्जे में कर लिया, तब से भारतीय जन-मानस पर असत्यों का धावा बोलना शुरु हुआ।

एक समय था, जब दुनिया भर में एक ही आर्य-जाति जाज्वल्यमान रही थी। आर्य-सभ्यता कई भू-खण्डों और देशों में विकसित हुई थी। सम्पूर्ण विश्व आर्यावर्त था। इसके प्रमाण खोजने के लिए इतिहास के पृष्ठों को पलटने की कोई आवश्यकता नहीं है। कहीं जाकर पता लगाने की जरूरत भी नहीं है। एशिया से यूरोप तक, अफ्रीका से अमेरिका तक, अनेक भू-खण्डों में..... धीरे-धीरे ईसाई धर्म, इस्लाम धर्म या किसी अन्य धर्म अथवा वाद के प्रभाव में आने वाले मलेशिया, इंडोनेशिया, कम्बोडिया, वियतनाम, लाओस, चीन, जापान, अफगानिस्तान, ईरान, इराक, पालस्तीना, इजराइल, रूस, इटली, इंग्लैण्ड, फ्रान्स, मेक्सिको, सेन्ट्रल अमेरिका, नॉर्थ अमेरिका जैसे कई देशों की खुदाइयों में प्रकट शिल्पों और निर्मितियों का एक बार अवलोकन करने से इसके प्रमाण मिल जाते हैं। तत्युगीन आर्य-सभ्यता के प्रमाण के रूप में अग्निकुण्डों, यज्ञशालाओं, देवमूर्तियों, अनगिनत मंदिरों और अतिप्राचीन निर्मितियों का इन खुदाइयों में प्रकट होना इस बात का स्पष्ट प्रमाण देता है कि उन दिनों विश्व भर में आर्य-सभ्यता विकसित रूप में प्रचलित हुई थी।

ईसाई और मुसलमान धर्मों के आविर्भाव के बाद कई देशों में आर्य-सभ्यता पर प्रहार हुए और उसके नामोंनिशान मिटाने के प्रयत्न भी हुए। इस प्रयत्न में कई भयानक युद्ध हुए, विध्वंसकारी घटनाएँ हुई और लाखों व करोड़ों की संख्या में लोग मारे गए। मात्र भारतीय उप महाद्वीप में ही आर्य-सभ्यता बच गई। गोरों ने इस देश को अपने कब्जे में लेकर हमें अपनी मूल सभ्यता व संस्कृति से पूरी तरह दूर करने का षड्यन्त्र किया और काफी हद तक उन्हें सफलता मिली है।

गोरों ने भारतीय इतिहास का वक्रभाष्य देकर यह विचार सामने रखा कि आर्य बाहर के लोग हैं, दूसरे देश से आकर उन्होंने भारत पर आक्रमण किया था और यहाँ की आदिवासी द्रविड़ सभ्यता को आर्यों ने ही मिटा दिया। मैक्स मुल्लर जैसे ईसाई धर्म के समर्थक इतिहासकार ने ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीति का समर्थन करते हुए इतिहास को गलत ढंग से परिभाषित किया और नये तथ्यों को सामने रखा। इन्हीं गलत तथ्यों को मैकॉले शिक्षा-पद्धति के अन्तर्गत पाठ्यांशों के रूप में रखकर, कई पीढ़ियों तक छात्रों को गुमराह किया गया। परिणामस्वरूप इस देश के विद्वान् भी इन तथ्यों को इतिहास के रूप में स्वीकार करने को मजबूर हुए।

इसके परिणाम कितने अनर्थदायक सिद्ध हुए, इसका विवरण आपको देने की आवश्यकता नहीं है। मैकॉले की शिक्षा-नीति और रीति के कारण सम्पूर्ण विश्व को सभ्यता के पाठ सिखाकर, मानव-जाति को शिक्षा और विज्ञान के वरदान देने वाली वैदिक आर्य-संस्कृति के वारिस के रूप में स्वयं को घोषित कर गर्व का अनुभव करने के सुअवसर को हमसे छीन लिया गया है और इन दिनों इसके बदले में हम स्वयं को आर्य-सभ्यता के वारिस के रूप में पहचानने में शर्मिन्दगी का अनुभव कर रहे हैं। दस हजार वर्षों के

भारतीय इतिहास में, जो हम जानते हैं, आर्य-सभ्यता व संस्कृति के साथ इस देश के घनिष्ठ सम्बन्ध के कई प्रमाण हमें मिलते हैं। लेकिन अंग्रेजों के भारत पर दुराक्रमण के बाद, इस देश की संस्कृति पर उन्होंने जो प्रहार किये, उनके परिणामस्वरूप यह सम्बन्ध ढ़ीला हो गया। पढ़े-लिखे लोग भी यही मानने लगे कि हमारे पूर्वज अनपढ़, मूर्ख और असभ्य थे। सच्चाई यह है कि हमारे पूर्वजों ने ही ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में सम्पूर्ण विश्व का मार्ग-दर्शन किया था और मानव-जाति को इन्होंने ही अच्छे संस्कार दिये थे।

स्वतन्त्रता की प्राप्ति के बाद भी स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया। स्वतन्त्रता की प्राप्ति के बाद कई देशों में अपनी मूल संस्कृति, इतिहास और प्राचीन विरासत को पहचानने तथा राष्ट्रीय सांस्कृतिक पुनरूत्थान को प्राप्त करने की दिशा में कई सफल प्रयत्न हुए, किन्तु स्वाधीन भारत में ऐसे प्रयत्न नहीं हुए। वे ही लोग भारत के भाग्य-विधाता बने जिन्होंने मैकॉले शिक्षा-नीति का अनुसरण करने वाले विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त की। इन लोगों ने माना कि इस देश का प्राचीन इतिहास अन्धकारमय है, यह देश अन्धविश्वासों का अड्डा रहा है और गोरे शासकों की कृपा से शिक्षा प्राप्त उच्च शिक्षित लोगों ने पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव को स्वीकार कर जो स्वाधीनता-संग्राम कुशलतापूर्वक चलाया, उसी के परिणामस्वरूप हमें आजादी मिली है। इसी आस्था के कारण इन लोगों ने निष्ठापूर्वक अंग्रेजों द्वारा प्रदत्त विरासत का ही पाल किया।

कड़वी सच्चाई यह है कि सच्चे अर्थों में हमें अब तक आजादी नहीं मिली है। १५ अगस्त १९४७ में केवल सत्तान्तरण हुआ। ब्रिटिश शासक चले गये। लेकिन उन्हीं के प्रशंसक सत्ता में आये। गोरों ने अपने साम्राज्य को विस्तार देने के लिए अपेक्षित शिक्षा-नीति अपनायी। पराधीन भारत में देशवासियों का शोषण करने गोरों ने जो पुलिस-कानून अपनाया, जो इण्डियन पीनल कोड और एविडेन्स एक्ट बनाये, वे अब भी प्रचलन में हैं। वैज्ञानिक क्षेत्र भारत की सुसम्पन्नता और आध्यात्मिक क्षेत्र में उसक परमोत्कृष्टता को सारी दुनिया ने पहचान लिाय, किन हमारे बुद्धिहीन बुद्धिजीवियों ने उनकी महत्ता को स्वीक नहीं किया। शिक्षाविद् अब भी छात्रों को पाठ्यांशों के रू में उन्हीं तथ्यों को पढ़ाने लगे कि आर्यों ने इस देश प आक्रमण किया। आर्यों के **आक्रमण का सिद्धान्त** (Arya Invasion Theory) नितान्त गलत धारणा है। सच्चाई य है कि आर्य कहीं बाहर से नहीं आये। वे मूलत: इस पुण्यभूमि के थे और यहीं से वे दुनियाभर में विस्तृत होक वैदिक संस्कृति को विश्व-व्याप्त बनाया है। दुनियाभर के लोग इस तथ्य को एक परम ऐतिहासिक सत्य के रूप स्वीकार करने लगे, किन्तु हम अब भी अपने छात्रों क आर्यों के भारत पर दुराक्रमण के पाठ को ही पढ़ाने लगे है

कुछ समय पहले चीन में हुई खुदाईयों में उस शासक की समाधि सामने आई, जिन्होंने दो हजार वर्ष पूर्व शास किया था। रूस में चौदाह सौ वर्ष पुरानी श्री महा विष्णु क मूर्ति मिली। उन दोनों देशों के नागरिक इस बात को लेक खुश हुए कि उन्हें अपने प्राचीन इतिहास के महत्वपू प्रमाण मिले।

लेकिन हमारे देश में स्थिति इसके विरुद्ध होती है पुराणों में किए गए वर्णनों के समान श्री कृष्ण भगवान क द्वारिकापुरी समुद्र के गर्भ में प्रकट होने पर और अमेरिक '**नासा**' के वैज्ञानिकों द्वारा श्री रामचन्द्र द्वारा निर्मित से का आविष्कृत होने का प्रमाण देने पर भी, हमारे इतिहासक श्री राम और श्री कृष्ण को इतिहास-पुरुष के रूप स्वीकार करने संसिद्ध नहीं हो रहे हैं। वे भारत के अतीतकालीन वैभव और इतिहास की प्राचीनता ए सुसम्पन्नता की पुष्टि करने और इस बात को लेकर ग करने का हमें अवसर नहीं देते हैं।

शेष भाग अगले अंक में....

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ह जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकत क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.

गृहस्थ-सन्त - पं. भगवान सहाय

पं. भगवान सहाय, जिनको देश-विदेश में कोई नहीं नता, समाचार पत्रों में जिनका नाम नहीं मिलता, स्थानीय र पर भी किसी संगठन, संस्था के प्रधान या मन्त्री के में जिनकी कोई पहचान नहीं, फिर भी उनके बड़प्पन कोई कमी नहीं थी। जो कोई उनके सम्पर्क में आया, की दयानन्द, वेद, ईश्वर के प्रति अनन्य निष्ठा, स्वभाव सरलता, व्यवहार की सहजता, हृदय की उदारता से ावित हुए बिना नहीं रहता था।

पं. भगवान सहाय आर्यसमाज, अजमेर के मन्त्री ाचन्द के सम्पर्क से आर्यसमाजी बने। स्वाध्याय से उन्होंने पने विचारों को दृढ़ बनाया, उसे जीवन में उतार कर क आदर्श जीवन के धनी बने। दुकान पर ग्राहक उनकी ानदारी और सत्यनिष्ठा से प्रभावित होकर आता था। मान लेने से पहले उसे वेद, ईश्वर का स्वरूप, आर्यसमाज सिद्धान्तों का परिचय लेना पड़ता था, तब उसे उसका मान मिलता था।

यज्ञ के प्रति उनकी आस्था से वे लोग परिचित हैं, न्होंने कभी उनकी दुकान से हवन सामग्री खरीदी है। षि उद्यान के सभी समारोहों के लिये उनका सामग्री दान ारता से होता था। दैनिक यज्ञ भी उनकी सामग्री के बिना भव नहीं थे। ऋषि उद्यान उनके लिये प्रिय और आदर्श ान था, जिसको वे मृत्युक्षण तक भी नहीं भूले। वे स्वयं षि मेले के ऋग्वेद पारायण यज्ञ में उपस्थित नहीं हो कते थे, अपने दोहित्र विवेक को भेजकर अपनी अन्तिम हुति यज्ञ में डलवाई।

गुरुकुल के ब्रह्मचारियों और आर्य विद्वानों तथा साधु- तों को भोजन कराने, स्वागत-सत्कार करने में उन्हें ार सुख मिलता था। मृत्यु के समय भी आश्रमवासियों र समारोह के अतिथियों के लिए भोजन कराने का कार्य ीं भूले। अन्तिम इच्छा के रूप में उन्होंने अपनी अन्त्येष्टि दक रीति से करने और अपनी शरीर की भस्म को ऋषि ान की मिट्टी में डालने का निर्देश अपने परिवार के ों को दे दिया था, साथ ही आदेश देना भी नहीं भूले कि न्तिम संस्कार के बाद कोई पाखण्ड मेरे नाम पर मत ना। शान्ति यज्ञ के साथ सब क्रियायें समाप्त समझना।

पं. भगवान सहाय विद्वानों की श्रेणी में नहीं आते थे, तु उनका सैद्धान्तिक ज्ञान इतना दृढ़ और स्पष्ट था कि छे विद्वानों की बुद्धि भी काम नहीं करती। लगभग चालीस वर्ष पूर्व जूलाई का मास था, मैं अध्यापन के लिये अपने महाविद्यालय के लिये जा रहा था, मेरा मार्ग उनकी दुकान के सामने से होकर जाता था, जैसे ही में उनकी दुकान के सामने से निकला, उन्होंने मेरा नाम लेकर पुकारा, मैं रुका, वे दुकान से नीचे उतरकर आये, कहने लगे- पण्डित जी! वर्षा का समय है, वर्षा नहीं हो रही है, किसान व्याकुल हैं, वृष्टि-यज्ञ कराओ, जिससे वर्षा हो। मैंने उत्तर दिया- पण्डित जी! वृष्टि-यज्ञ वैज्ञानिक प्रक्रिया है, मैंने यज्ञ कराया भी और वर्षा नहीं हुई तो आप कहेंगे कि पण्डित ने झूठ बोला- यज्ञ से वर्षा होती है। इस पर भगवान सहाय जी का उत्तर में कभी नहीं भूला। उस उत्तर ने मेरे पूरे जीवन की समस्या का समाधान कर दिया, वे कहने लगे- पण्डित जी! कभी प्रार्थना करने वाला स्वयं प्रार्थना स्वीकार करता है क्या? अर्जी लगाना हमारा काम है, मंजूर करना, न करना ईश्वर का काम है। यज्ञ तो हमारी प्रार्थना है। पण्डित जी का उत्तर इतना सटीक था कि मैं उन्हें जीवन में कभी मना ही नहीं कर सका।

यज्ञ से उनका इतना प्रेम था कि जब कोई उनसे यज्ञ के विषय में पूछता तो वे कहते थे कि यज्ञ जड़-चेतन दोनों का भोजन है। हम मनुष्यों को भोजन कराते हैं तो केवल मनुष्यों की तृप्ति होती है, परन्तु यज्ञ से जड़-चेतन दोनों की तृप्ति होती है, इससे दोनों में पवित्रता आती है। आज उनसे सामग्री लेकर यज्ञ करने वालों की यही चिन्ता सता रही है- क्या यज्ञ की शुद्ध सामग्री हमको मिलती रहेगी? जिसकी आशा हम उनके उत्तराधिकारियों से कर रहे हैं।

पं. भगवान सहाय जी की सहनशीलता अद्भुत थी। उनके साथी, परिवारजन, ग्राहक, सेवक कोई भी किसी कारण से कष्ट हो जाय, क्रोध करे, कठोर शब्द कहे, वे कभी किसी से प्रभावित नहीं होते थे। उसे बड़े शान्त और सहज भाव से सुन लेते थे, मुस्करा देते थे। ऐसे समाज सेवक का अपने मध्य से जाना, किसको दु:खद नहीं लगेगा। परन्तु परमेश्वर की व्यवस्था और प्रकृति के नियम तथा मनुष्य की नियति कौन बदल सका है। हम दिवंगत आत्मा की शान्ति, सद्गति की प्रार्थना और परिवारजनों को इस दु:खद परिस्थिति को सहन करने की, सामर्थ्य की कामना परमेश्वर से करते हैं। वेद कहता है-

भस्मान्तं शरीरम्।

- डॉ. धर्मवीर

संस्था – समाचार

०१ से १५ नवम्बर २०१

* **यज्ञ एवं प्रवचन**- जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान आर्य जगत् के उन स्थलों में से है जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात: काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ एवं महर्षि दयानन्द कृत वेद भाष्य का स्वाध्याय किया जाता है। रविवार प्रात:काल विशेष यज्ञ किया जाता है, जिसमें नगर निवासी सज्जन, माताएँ, बहनें, बच्चे सम्मिलित होते हैं। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और महर्षि दयानन्द द्वारा रचित आर्योद्देश्यरत्नमाला नामक लघुग्रन्थ का स्वाध्याय कराया जाता है। प्रत्येक रविवार को सायंकाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भजन, प्रवचन होता है। यहाँ पर दर्शन, उपनिषद्, रचनानुवाद, कौमुदी की कक्षायें निरन्तर चलती रहती है, जिनमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ-साथ आश्रमवासी संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें और बाहर से आने वाले जिज्ञासु लोग ज्ञान अर्जित करते रहते हैं। आर्यवीर दल का प्रशिक्षण कार्यक्रम सुबह शाम नियमित रूप से होता है। इसमें कराटे, लाठी, आसन, प्राणायाम का अभ्यास आदि कराया जाता है। इसमें नगर के युवक-युवती और बालक भाग लेते हैं।

प्रात:कालीन सत्संग में प्रवचन देते हुए आचार्य डॉ. **धर्मवीर जी** ने कहा कि परमेश्वर की उपासना का आरम्भ विचार से होता है। हम किसी भी व्यक्ति या वस्तु के बारे में विचार करते हैं तो हमारे हाथ, पैर आँख, कान, मुख आदि इन्द्रियाँ काम नहीं आती हैं। इसी प्रकार ईश्वर के सम्बन्ध में विचारपूर्वक उपासना करने के लिये हाथ-पैर चलाने की कोई आवश्यकता नहीं होती है। संसार में ज्ञान प्राप्त करने और धन आदि पदार्थ प्राप्त करने में बहुत श्रम करना पड़ता है, लेकिन उपासना के लिये मन से विचार करना और बुद्धि से निश्चय करना होता है। स्तुति करने से ईश्वर के प्रति प्रेम बढ़ता है और उपासना से आनन्द प्राप्त होता है। थोड़े समय की उपासना का थोड़ा और अधिक समय की उपासना का अधिक लाभ होता है। हम ईश्वर के बारे मे बहुत कम जानते हैं, किन्तु वह हरेक अच्छे-बुरे व्यवहार के बारे में सब कुछ जानता है। वह सबके साथ सदा रहता है। जैसे शरीर रक्षा करने के लिये भोजन आदि करना आवश्यक है, वैसे ही दु:खों से बचने के लिये यम-नियम का पालन करते हुए ईश्वर की उपासना आवश्यक है। समय और स्थान का निश्चय करने के बाद उपासना आलस्य नहीं आता है। परमात्मा को किसी पदार्थ आवश्यकता नहीं है, अत: मूर्ति, चित्र आदि में भोग लगा कपड़े और आभूषण पहनाना आदि व्यर्थ हैं। मनुष्य दो सम्पत्तियाँ अपने जीवन में अवश्य प्राप्त करना चाहिये पहला स्वास्थ्य और दूसरा साधना। स्वास्थ्य से इस लो में सब कुछ प्राप्त हो सकता है और साधना से जन्म जन्मान्तर में ईश्वर का आनन्द मिलता रहता है। ईश्वर उपासना तीन प्रकार से होती है- एक आँख बन्द कर ध्य में बैठना, दूसरा ईश्वर के विषय में सुनना और पढ़ तीसरा- मैं जो कुछ कर रहा हूँ, उसे ईश्वर देख रहा है, सोचकर बुरे कर्मों को छोड़कर अच्छे कर्म करना। संस के सब साधन मुक्ति में सहायक है, ऐसा जानकर उन उचित उपयोग करना चाहिये। योग शिविर की समाप्ति सभी साधकों को आजीवन नित्य ध्यान करने का संक करवाते हुए आपने कहा कि यदि किसी दिन उपासना छ जाये तो चिन्ता करने या डरने की कोई बात नही है, जि दिन परिस्थिति अनुकूल हो जाय, उस दिन पुन: ध्य करना शुरू कर देवें।

दीपावली पर्व के इस अवसर पर महर्षि दयानन्द जीवन की विशेषताओं के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए आच डॉ. धर्मवीर जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द संसार के अ महापुरुषों की तुलना में अद्वितीय विद्वान्, ईश्वर उपासक मानवमात्र के शुभचिन्तक और महान् राष्ट्रभक्त थे। आजक कोई साधु, महात्मा और सन्त मठ, मन्दिर, आश्रम बन बिना नहीं रहता। स्वामी जी शास्त्रार्थ व वेद प्रचार क जाते थे तो अपना पूरा पुस्तकालय अपने साथ ले जाते अन्य भी सामान थे, किन्तु उनको रखने के लिए को स्थान नहीं बनाया। उनका मानना था कि संन्यासियों देश-देशान्तर में घूम-घूम कर वैदिक धर्म का प्रचार कर चाहिये। जो एक नियत स्थान पर टिका रहता है, वह पति हो जाता है। स्वामी जी जहाँ-जहाँ गये, वहाँ-वहाँ उन भक्तों ने आश्रम आदि बनवाये, किन्तु स्वामी जी ने अप स्वयं के लिए कभी कोई स्थान निश्चित नहीं किया और ही कोई भवन आदि बनवाया। वे अपने सेवकों को गल करने पर दण्ड देते और अच्छा काम करने पर पुरस्कार देते थे। उन्हें सब मनुष्यों से बहुत प्रेम था। वे जाति मजह

आधार पर भेदभाव नहीं करते थे। जिन्हें अछूत कहकर ाज ने अपने से अलग कर दिया, उनको स्वामी जी ने लगाया। समाज के सबसे अधिक उपेक्षित, अनाथों र विधवाओं के लिए कई अनाथालय और विधवा आश्रम नवाये। अन्य गुरुडमवादी और सम्प्रदायिक लोग अपने ष्यों को तर्क करने की अनुमति नहीं देते हैं, उनको ड़-बकरी की तरह हाँकते हैं। किन्तु महर्षि बड़े उदार थे, होंने अपने अनुयाइयों को विद्या पढ़ने-पढ़ाने, तर्क करने पूर्ण स्वतन्त्रता दी। आयुर्वेद के ग्रन्थ चरक संहिता में क्षा करके गुरु बनाने का विधान है। धर्म के नाम पर ने पाखण्ड और अन्धविश्वासों को अपने प्राण की चिन्ता ये बिना दूर करने का सब प्रकार से प्रयास किया। ामी जी गुण-कर्म-स्वभाव से वर्ण व्यवस्था का समर्थन ते थे; वे जन्मना जाति प्रथा के घोर विरोधी थे। उनके ष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपनी सन्तानों का अन्तर्जातीय वाह किया। स्वामी जी विपरीत परिस्थितियों में भी लेखन, ख्यान करते रहे। धर्म-परिवर्तन का उन्होंने कड़ा विरोध या। वे प्रवाह में बहने वाले नहीं थे, वे सम्पूर्ण प्राणी मात्र हितैषी थे। गाय आदि पशुओं की रक्षा और वृद्धि के ये गोशालाएँ खुलवायीं। समाज में वेदविरुद्ध जो परम्पराएँ लित थी, उन सबका विरोध किया। वे सभी प्रकार के याय को रोकना चाहते थे। उन्होंने वेद के सार्वकालिक, र्वदेशिक शाश्वत सिद्धान्त का प्रचार किया।

आर्यन पब्लिक स्कूल, बीकानेर से आये हुए छात्रों सम्बोधित करते हुए आचार्य जी ने कहा कि विद्यार्थियों अध्यापक से प्रश्न पूछने में भय, शंका ओर लज्जा तथा र देने में संकोच नहीं करना चाहिए। कक्षा में अध्यापक सामने बैठने वाले विद्यार्थी ही पढ़ाई में आगे बढ़ सकते अध्यापक के पूछने पर विद्यार्थियों को तत्काल उत्तर ा चाहिए। अध्यापक के पाठ पढ़ने के बाद, उसे स्वयं ढ़ना और याद कर लेना चाहिए। अध्यापक के बोलते मय ध्यान से सुनना चाहिए। कोई पाठ हमें तभी समझ में ता है, जब हम उसे सुनने के बाद पढ़ें। अध्यापक जिस ठ को पढ़ाने वाले हैं, उस को घर पर ही पढ़कर जाना हिए। क्योंकि पढ़ने के बाद सुनने से पाठ जल्दी समझ आता है। पढ़े हुए पाठ को बार-बार दोहराने से ठीक से द हो जाता है। पढ़ने-सुनने के बाद विचार करना और ख कर देखना चाहिए। पढ़ने, सुनने, बोलने और लिखने अलग-अलग परीक्षा होना चाहिए, तभी हम किसी षय की प्रामाणिक योग्यता प्राप्त कर सकते हैं।

रविवारीय प्रात:कालीन सत्संग में **उपाचार्य सत्येन्द्र** जी ने यजुर्वेद के छत्तीसवें अध्याय के अठारहवें मन्त्र '**दृते दृंह मा मित्रस्य**' संसार के सब प्राणी और मनुष्य लोग मुझे मित्र की दृष्टि से देखें और मैं संसार को मित्र की दृष्टि से देखूँ। पूरे विश्व के सब स्थानों में, समाज में सुख का आधार परस्पर मित्रता और स्नेह है। हम शरीर से कार्य करते रहते हैं, लेकिन जब तक हम मन से कमजोर होते हैं, तक तक किसी कार्य में सफलता नहीं मिलती, क्योंकि जैसा हमारा मन होता है वैसी ही वाणी और कर्म होते हैं। व्यवहार में हम देखते हैं कि दु:ख की घड़ी में हमारे मित्र हमें सहारा देते हैं, आगे बढ़ने की प्रेरणा करते हैं। नीतिकारों ने अच्छे मित्र के कुछ लक्षण इस प्रकार बताये हैं-वह मित्र पाप कर्मों से हटाता है, कल्याण के कार्यों में लगाता है, गुप्त बातों को प्रकट नहीं करता, गुणों को सबके सामने प्रकट करता है, आपत्ति में धन आदि से सब प्रकार सहायता करता है।

सायंकालीन सत्संग में महर्षि दयानन्द द्वारा रचित आर्योद्देश्यरत्नमाला के ज्येष्ठ-कनिष्ठ व्यवहार के विषय में उन्होंने कहा कि हमें ऐसे कार्य करना चाहिये, जिससे हम अपने बड़ों का सम्मान कर सकें और अपने से छोटों को उचित शिक्षा भी दे सकें। यदि हम अपने छोटों से सम्मान चाहते हैं तो अपने से बड़े लोगों को हमें सम्मान देना ही होगा। अपने बराबर वालों के साथ भी सम्मानपूर्वक व्यवहार करना चाहिये। इसी प्रकार व्यभिचार-त्याग, जीव का स्वरूप, स्वभाव, प्रलय, आप्त, परीक्षा आदि आठ प्रमाणों की भी विस्तृत व्याख्या की।

प्रात:कालीन सत्संग में वयोवृद्ध ११६ वर्षीय **स्वामी सर्वानन्द जी** महाराज ने प्रवचन में अपना परिचय देते हुए कहा कि मैं अयोध्या का रहने वाला त्रिपाठी ब्राह्मण हूँ। जंगल में, गुफाओं में मैंने तपस्या की।

मैं ३०० प्रकार के आसन करता था। मॉरीशस, अफ्रीका आदि देशों में रहा। मैंने माऊण्ट-आबू, कोलकाता, रानीगंज एवं अन्य स्थानों में प्रचार किया। उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि सारे भारतवासियों को संगठित होकर रहना चाहिए। परमात्मा का नाम वेद, स्मृति, रामायण, गीता आदि में ओ३म् बताया गया है। उन्होंने आगे कहा कि यदि कल्याण चाहते हो तो दो बातों को नहीं भूलना चाहिए- मृत्यु और परमेश्वर। मृत्यु को जानते हैं, मानते नहीं। ईश्वर को मानते हैं, जानते नहीं। जो ईश्वर को छोड़कर अन्य जड़ पदार्थों की उपासना करते हैं, वे अन्धकारमय लोक में प्रवेश करते हैं।

अपने मन को शुद्ध बनाकर सर्वरक्षक अत्यन्त मंगलकारी परमात्मा की नमस्कार पूर्वक प्रात: सायं उपासना करना चाहिए, ओम् का जप करना चाहिए। परिवार के विषय में चर्चा करते हुए अपने कहा कि भाई-भाई में वैसा ही प्रेम होना चाहिए जैसा राम और भरत का परस्पर प्रेम था। राम से मिलने भरत गए, तब राम अपने धनुष को छोड़कर भरत को गले लगा लेते हैं।

रविवारीय सायंकालीन सत्र में **ब्रह्मचारी निरंजन** ने उर्दू भाषा और कुरान पढ़ने का अनुभव सुनाया। ऋषि उद्यान में ही एक मौलवी से उर्दू पढ़ी। उन्होंने वर्ष २५ जुलाई को अजमेर से जम्मू के लिये प्रस्थान किया। वहाँ पहुँचने के तीन दिन बाद एक ब्राह्मण गुरुजी से उर्दू पढ़ना शुरू किया। गुरुजी को केवल उर्दू भाषा की जानकारी है। लगभग एक महीने बाद **ब्र. शोभित जी** और दिल्ली से **रुद्रदत्त जी** के साथ वैष्णोदेवी घूमने गये। लगभग ढाई तीन माह में पढ़ाई पूरी हो गई, पश्चात् कश्मीर घूमने गये। वहाँ मुस्लिम आबादी अधिक है, हिन्दू कम हैं। आपने बताया कि पहाड़ों में घोड़े, गधे पर बैठकर यात्रा करते हैं। कश्मीर में हिन्दू लोग मुसलमानों से डरकर रहते हैं, तिलक लगाकर पूजा पाठ करने पर मुसलमान लोग हिन्दुओं की हत्या कर देते हैं। वे शंकराचार्य मन्दिर देखने गये। वहाँ सुरक्षा के लिए पुलिस और सेना जगह-जगह तैनात है। कुरान की एक आयत सुनाकर उन्होंने उर्दू में ही उसकी व्याख्या की।

रविवारीय प्रात:कालीन सत्संग में **श्रीमती सीमा जी** ने भजन-परमात्मा के सभी गीत गाओ तो आवागमन से भी छूट जाओ सुनाया।

* **विशिष्ट व्यक्तित्व**- परोपकारिणी सभा के कोषाध्यक्ष **श्री सुभाष नवाल जी** का २८ अक्टूबर को जन्मदिन मनाया गया। इस अवसर पर सभा प्रधान आचार्य डॉ. धर्मवीर जी ने कहा कि जन्मदिन, वर्धापन संस्कार है। आजकल मोमबत्ती बुझाकर जन्मदिन मनाने का प्रचलन है, जो स्वास्थ्य के लिये पूर्णत: हानिकारक है। आस्ट्रेलिया, स्पेन और पुर्तगाल की सरकार ने वहाँ की चिकित्सा परिषद् की सिफारिश पर मोमबत्ती बुझाकर जन्मदिन मनाने पर कानूनी बनाकर प्रतिबन्ध लगा दिया है। भारत सरकार भी इस पर विचार कर रही है। जन्मदिन परोपकार करने का दिन है, उस दिन आशीर्वाद और शुभकामनायें मिलती है। प्राचीन काल में हमारे देश में जिनका जन्मदिन मनाया जाता था, उनके नाम से दान आदि देकर परोपकार का विशेष कार्य किया जाता था। श्री सुभाष नवाल जी सभा सक्रिय कार्यकर्त्ता और विशेष आर्थिक सहयोगी है। उनक पूरा परिवार सभा से जुड़ा हुआ है।

* परोपकारिणी सभा के सदस्य मेरठ निवासी श् सत्येन्द्र सिंह जी आर्य और उनके परिवार को आकस्मि गहरा आघात लगा है। वर्तमान में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र बहुत अधिक प्रतिस्पर्धा है। सभी लोग व्यवसाय, शिक्ष खेल, सामाजिक प्रतिष्ठा में अन्य लोगों से सदा आगे रह चाहते हैं, इसलिए मनुष्य अवसादग्रस्त रहने लगा है व्यवसाय में बहुत बड़ी हानि और ऋण के बोझ से मानसि तनाव के कारण श्री सत्येन्द्र जी के छोटे पुत्र पंकज अपने पत्नी और पुत्री के साथ आत्महत्या कर ली। सभा कार्यकारी प्रधान डॉ. धर्मवीर जी, मंत्री श्री ओममुनि ज आचार्य सत्यजित् जी, श्री रामगोपाल जी गर्ग, श्रीमती ज्योत्स् जी शोकाकुल परिवार को सान्त्वना देने मेरठ गए। ईश्व उनके परिवार को दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करे परोपकारिणी सभा, गुरुकुल व सभी आश्रमवासियों क ओर से दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना कर हुए हार्दिक श्रद्धाञ्जलि प्रदान करते हैं।

ऋषि मेले की तैयारियों को अन्तिम रूप देने के लि ०८ नवम्बर को पूर्व गठित विभिन्न समितियों और उसके कार्यकत्ताओं की बैठक ऋषि उद्यान की यज्ञशाला में सम्पन्न हुई।

* **आचार्य डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम** २७-२९ नवम्बर - गुरुकुल होशंगाबाद में उपदेश करेंगे

* **आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम:** **सम्पन्न कार्यक्रम** -७-८ नवम्बर २०१५ गुरुकुल आर्यनग हिसार के वार्षिकोत्सव में मुख्य वक्ता के रूप में।

आगामी कार्यक्रम:- (**क**) २३-२४ नवम्बर २०१ आर्यसमाज टोडरपुर, बहरोड, अलवर के वार्षिकोत्सव मुख्य वक्ता के रूप में प्रवचन करेंगे।

(**ख**) २५ नवम्बर २०१५ - मालपुरा में यज्ञ उपदेश करेंगे।

(**ग**) २८-२९ नवम्बर २०१५ - लखनऊ में सत्संग प्रवचन करेंगे।

* **आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम:** **सम्पन्न कार्यक्रम**- (**क**) ८ नवम्बर २०१५ बिजनौ उ.प्र. में मुण्डन संस्कार करवाया। (**ख**) १२-१७ नवम्ब २०१५ रोहतक में योग शिविर में शिविरार्थियों को यो सिखाया।

आगामी कार्यक्रम:- २७-२९ सहारनपुर में सामवे पारायण यज्ञ करवाऐंगे।

आर्यजगत् के समाचार

१. पुरोहित एवं उपदेशक प्रशिक्षण शिविर- देश-विदेश धर्म प्रचार हेतु पुरोहित एवम् व्याख्यान के विशिष्ट प्रशिक्षण निमित्त शास्त्री या उसके समकक्ष योग्यता वाले युवाओं के ए त्रिदिवसीय शिविर आयोजित है। शास्त्री या उसके समकक्ष ग्री अपेक्षित नहीं है। यदि आप स्वयं को उसके उपयुक्त मझते हैं और इस क्षेत्र में रुचि रखते हैं तो सम्पर्क करें। अभी रम्भिक स्तर पर त्रिदिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन ज्या जा रहा है। इसके पश्चात् इसको विस्तार दिया जाएगा।

प्रशिक्षण विषय: (१) वैदिक दर्शन एवम् सिद्धान्त (२) र्म काण्डों की प्रक्रिया और उनका वैज्ञानिक महत्त्व (३) ाख्यान कला (४) लोक व्यवहार

इस शिविर का आयोजन दिनांक १६-१८ जनवरी २०१६ ो होगा। पंजीकृत उपदेशक प्रशिक्षुओं को दिनांक ५.०१.२०१६ को प्रशिक्षण स्थान पर पहुँचा होगा, निवास व ाजनका समुचित प्रबन्ध रहेगा। **सम्पर्क**- श्री सुरेन्द्र प्रताप- ान: ४६६७८३८९, ९९५३७८२८१३ या श्री राजीव चौधरी- ।. ९८१००१४०९७ को पंजीकृत करायें।

२. **गौ-पालन**- वर्तमान समय में गौ हत्या, गौ मांस की हस भयानक रूप लेती जा रही है। नित्य कोई न कोई चर्चा क्ष-विपक्ष में होती रहती है। इस विषय में कुछ तथाकथित द्वान् टी.वी. चैनलों या मीडिया में वेदादि शास्त्रों के झूठे माण बोल देते हैं कि वेदों में मांस, गौ मांस या मांस खाने का संग हैं। वेदों में तो स्पष्ट कहा है "गां मा हिंसी" गाय की ंसा मत करो, "अश्वं मा हिंसी" घोड़ों की हिंसा मत करो, अजां मा हिंसी" बकरों की हिंसा मत करो, "मा मा हिंसी" कसी जीव की हिंसा मत करो। कुछ विद्वान् यजुर्वेद में आए गौ धा यज्ञ, अश्वमेधयज्ञ, पितृ मेध, सर्व मेध यज्ञों का हवाला कर वेदों में गौ हत्या का झूठा प्रमाण देते रहते हैं, वे ये बताएँ क मेध का अर्थ यदि आहुति है तो पितृ में अपने माता-पिता ी आहुति दोगे क्या? वेदों में मेध शब्द का अर्थ रक्षा है, अत: ाय आदि पशु-पक्षियों की रक्षा करनी चाहिए।

३. **निर्वाण दिवस मनाया**- स्वराज्य के प्रथम मंत्रदृष्टा, ामाजिक पुनर्जागरण के पुरोधा एवं आर्यसमाज के प्रवर्त्तक हर्षि दयानन्द सरस्वती का १३२वाँ निर्वाण दिवस ११ नवम्बर ०१५ को दीपावली के पावन पर्व पर आर्यसमाज, अजमेर के त्वाधान में आर्य समाज भवन में प्रधान प्रो. रासासिंह पूर्व ांसद की अध्यक्षता में सौल्लास मनाया गया। सर्वप्रथम डॉ. क्षराज, डॉ. रामसिंह शास्त्री व अमरसिंह शास्त्री के ब्रह्मत्व में वशस्येष्टि यज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसमें यजमान प्रो. रासासिंह, चन्दराम आर्य, नवीन मिश्र, डॉ. आराधना एवं राजकुमार आसर्य थे।

आर्य समाज, अजमेर के प्रधान रासासिंह तथा मंत्री चन्दराम आर्य ने अपनी एक विज्ञप्ति में बताया कि विगत २००७ ई. से दो पक्षों में विभक्त आर्य समाज के दोनों पक्षों में सौहार्दतापूर्ण वातावरण में स्थानीय न्यायालयों में चल रहे परस्पर मुकद्दमों में राजीनामा हो गया है तथा एक दूसरे के विरुद्ध अधिकांश मुकद्दमों को वापिस ले लिया गया है। समझौतों के आधार पर गठित तदर्थ समिति के पदाधिकारियों को भवन तथा कार्यालय का कब्जा सौंपने के आदेश प्रदान कर दिये हैं। तदनुसार दिनांक ९.११.२०१५ ई. को दोपहर ४ बजे आर्यजनों की उपस्थिति में वेद मंत्रों व आर्य समाज के जयघोषों के मध्य थानाधिकारी क्लॉक टॉवर के प्रतिनिधि द्वारा समाज भवन की सील तोड़कर ताले खुलवाकर कब्जा प्रधान एवं मंत्री को विधिवत सौंप दिया।

इस तदर्थ एकता समिति के प्रधान प्रो. रासासिंह, मंत्री चन्दराम आर्य, कोषाध्यक्ष किशनलाल शर्मा, उपप्रधान नवीन कुमार मिश्र, उपमंत्री चिरंजीलाल शर्मा, महिला उपमंत्री डॉ. अराधना आर्य, अंकेक्षक श्रद्धानन्द शास्त्री, पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. राधेश्याम शास्त्री, अंतरंग सभासद् कृपालसिंह तोमर, डॉ. भागचन्द गर्ग, डॉ. मोक्षराज एवं श्रीमती मोहिनी तोमर होंगे।

४. **ब्रह्मचारिणियाँ पुरस्कृत**- हरियाणा संस्कृत अकादमी एवं गुरुकुल रेवली के संयुक्त तत्त्वावधान में १० अक्टूबर २०१५ को आयोजित अखिल भारतीय शास्त्रीय स्पर्धा का आयोजन हुआ। विभिन्न प्रतियोगिताओं में आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज की छ: बालिकाओं ने भाग लिया, जिसमें व्याकरण अष्टाध्यायी भाष्य प्रथमा वृत्ति १-४ अध्याय शलाका में ब्र. प्रज्ञा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, प्रथमा वृत्ति ५-८ अध्याय शलाका में ब्र. कृष्णा ने प्रथम व ब्र. मनीषा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। संयुक्त श्लोक गायन प्रतियोगिता में ब्र. कृष्णा व ब्र. प्रज्ञा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। धातुपाठ कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता में ब्र. सुनीति ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इन बालिकाओं के गुरुकुल पधारने पर आचार्या सूर्या देवी, आचार्या धारणा याज्ञिकी, श्रीमती अरुणा नागर सहित समस्त प्रबन्ध समिति ने राजस्थान व गुरुकुल का गौरव बढ़ाने पर स्वागत सत्कार के साथ शुभाशीष प्रदान किया।

५. **सामवेद महायज्ञ**- परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द सरस्वती उद्यान (गुरुकुल आश्रम) ग्रा. जमानी इटारसी, म.प्र. में तीन दिवसीय सामवेद महायज्ञ १२ से १४ जनवरी २०१६ तक आयोजित किया जा रहा है। सम्पर्क- ०७५०९७०६८२८, ०९४२९०४०३१०

गृहस्थ सन्त पंडित श्री भगवान सहाय जी

जिनका निधन १९ नवम्बर २०१५ को हुआ।

परोपकारी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक प्रेषण : ३० नवम्बर, २०१५ ३९५९/५९

परोपकारिणी सभा के संरक्षक
श्री गजानन्द जी आर्य

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

सेवा में,